Date of Posting 13-14 every month
Rs. 25/- per copy

DL No. DL (E)-20/5275/2020-2022
RNI No. DELHIN/2008/24416

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

❑ खंड : 13 ❑ वर्ष : 13 ❑ अंक : 7 ❑ जुलाई, 2020 ❑ मूल्य: 25.00 ❑ दिल्ली

बारिश के समय में पशुओं का उत्तम प्रबंधन

स्वस्थ पशु प्रबंधन से स्वच्छ दुग्ध उत्पादन

मछली पालन को मिले बढ़ावा ताकि गांवों के लोगों को कम लागत में मिले अधिक फायदा

कोविड महामारी के समय में डेरी पशुओं का सामान्य प्रबन्धन

AYURVET

PMKVY
प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना

कौशल भारत

कृषि और पशुपालन-ग्रामीण अर्थव्यवस्था की कुंजी

हमारे प्रमुख कौशल क्षेत्र

- दुग्ध उत्पादन
- कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन
- जैविक खाद्य उत्पादन
- बायोगैस संचालन
- जैविक खेती
- औषधीय पौधों की खेती
- हाइड्रोपोनिक्स प्रौद्योगिकी
- मत्स्य पालन

प्रशिक्षण पाएं, आमदनी बढ़ाएं

कृषि एवं पशुपालन को यदि कुशलता एवं ज्ञान के साथ किया जाए, तो यह आपके उत्पादन को दुगुना कर सकता है।

तो आईए, साथ मिलकर कुशल भारत का निर्माण करें, जो हमारे ग्रामीण रोजगार को संपन्नता से भर दें।

Contact Us

प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए सम्पर्क करें:-

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन

AYURVET

कॉरपोरेट ऑफिस: 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टॉवर, प्लॉट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010(उ.प्र.),दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स: 7100202

रजिस्टर्ड ऑफिस: 4 तल, सागर प्लाजा, डिस्ट्रिक सेंटर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-92

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

खंड : 13 | अंक : 7 | जुलाई, 2020 | दिल्ली

प्रकाशक व प्रधान सम्पादक :
मोहन जे. सक्सेना

सम्पादक:
डॉ. अनूप कालरा

संपादकमंडल:

आनन्द मेहरोत्रा एवं डॉ. दीपक भाटिया

संपादकीय सदस्य:

अमित बहल, डॉ. ए.बी. शर्मा, डॉ. भास्कर गांगुली, डॉ. दीप्ति राय एवं डॉ. आशीष मुद्गल

मूल्य : 25/- रुपए प्रति अंक
वार्षिक : 275/- रुपए

सारे भुगतान मनीआर्डर/चैक/ड्राफ्ट **''आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली''** के नाम से दिए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चैक में बैंक कमीशन के 30/- रुपए अतिरिक्त जोड़ दें।

पत्रिका से संबंधित सभी विवादित मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

पत्रिका में प्रकाशित लेख/विचार लेखकों के निजी हैं। प्रकाशक/संपादक इस हेतु उत्तरदायी नहीं हैं।

आयुर्वेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री मोहन जे. सक्सेना द्वारा छठा तल, सागर प्लाजा, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 से प्रकाशित व मै. श्री राम इंटरप्राईजेज, एम-71, जैन मंदिर गली, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

संपादकीय/व्यवस्थापीय कार्यालय: आयुर्वेट लिमिटेड, 101-103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010 (उ.प्र.). दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स : 91-120-7100202.

Web: www.ayurvet.com, e-mail: info@ayurvet.com

कहाँ क्या है

पशुधन

- बारिश के समय में पशुओं का उत्तम प्रबंधन कैसे करें 5
- कोविड महामारी के समय में डेरी पशुओं का सामान्य प्रबंधन 9
- दुधारू पशुओं में ट्राइकोमोनिएसिस संक्रमण 10
- पशुओं में कीटनाशकों की विषाक्तता का दुष्प्रभाव एवं उनका प्राथमिक उपचार 12
- स्वस्थ पशु प्रबंधन से स्वच्छ दुग्ध उत्पादन 15
- पशुओं में योनिमार्ग, गर्भाशय ग्रीवा या गर्भाशय का बाहर आना 19
- गिलोय (टीनोस्पोरा कार्डीफोलिया) 23
- गाय तथा भैंस में हीट की जांच की विधियां 25
- दुधारू पशुओं का प्रसव एवं प्रसवोपरांत प्रबंधन 31
- मछली पालन को मिले बढ़ावा ताकि गांवों में के लोगों को कम लागत में मिले अधिक फायदा 33
- गर्मी के मौसम में पशुओं में हीट स्ट्रेस के लक्षण तथा उसका बचाव 35
- अधिक दुग्ध उत्पादन हेतु गर्भित एवं नवजात पशुओं की देखभाल एवं प्रबंधन 37
- आधुनिक ब्रायलर उत्पादन 42
- दुधारू पशुओं के लिए आवास व्यवस्था 45
- सुरक्षित जीवन का संदेश 45

अन्य

- आप पूछे, विशेषज्ञ बताएं 44
- खोज खबर 28
- महत्वपूर्ण दिवस 40

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

आजकल कोरोना महामारी का प्रकोप चारों ओर दिख रहा है। आप सरकार के दिए हुए दिशा निर्देशों का पालन करते हुए अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। प्रवासी श्रमिक को रोजगार उपलब्ध करवाने एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए राज्य सरकारें काम कर रही हैं। हाल ही में छत्तीसगढ़ सरकार ने फैसला लिया है कि वह गोबर को खरीद महिला स्वयं सहायता समूह के माध्यम से कंपोस्ट व वर्मी कल्चर में बदल कर बेचगी। साथ ही, गोबर गैस प्लांट, उपले-कंडे, दीपावली के दीये बनाने व अंतिम संस्कार में भी गोबर का इस्तेमाल होगा। रासायनिक खाद से बांझ हो रही जमीन को राहत देने में यह एक स्वागत योग्य कदम है।

सरकार डेरी सेक्टर की मजबूती के लिए कई कदम तो उठा रही है, लेकिन उसके एक फैसले ने कोरोना के दौरान नुकसान झेल रहे पशुपालकों और डेरी इंडस्ट्री की चिंता बढ़ा दी है। टैरिफ रेट कोटा के तहत 15 फीसदी सीमा शुल्क की रियायती दर पर 10,000 टन स्किम्ड मिल्क पाउडर के इंपोर्ट की अनुमति दी गई है। डेरी एक्सपर्ट्स के मुताबिक सरकार के इस फैसले से डेरी उद्योग और डेरी किसानों को जबरदस्त झटका लगेगा। क्योंकि इस फैसले से जहां देश में स्किम्ड मिल्क पाउडर के दाम 80 रुपये प्रति किलो तक गिर सकते हैं, वहीं दूध के दामों में 7 से 8 रुपये प्रति लीटर की कमी आ सकती है।

केंद्रीय मंत्रिमडल ने आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत पशुपालन को प्रोत्साहन देने के मकसद से 15000 करोड़ रुपये की पशुपालन अवसंरचना विकास निधि (एएचआईडीएफ) बनाने को मंजूरी दे दी गई। स्कीम का लाभ व्यक्ति, किसान उत्पादक संगठन यानी एफपीओ, सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यम क्षेत्र की कंपनियां आदि उठा सकती हैं। इतना ही नहीं देश में डेढ़ करोड़ डेरी किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड की सुविधा दी जा रही है। इतना ही नहीं इस क्रेडिट कार्ड के जरिए डेरी किसानों को बिना गारंटी के 3 लाख रुपये तक का लोन भी मिलेगा। तो पशुपालक इसका लाभ उठाएं और अपनी आमदनी को बढ़ाएं।

नवीन अंक आपके हाथों में है। इस अंक में हमने महत्वपूर्ण विषयों पर आलेख दिए हैं। हमें पूरा विश्वास है कि पहले अंकों की तरह ही यह अंक भी आपके लिए उपयोगी साबित होगा। आप अपने सुझाव, प्रतिक्रियाएं एवं प्रस्ताव हम तक अवश्य पहुंचाएं, ताकि उसे भी आगामी अंक में स्थान दिया जा सके।

(डॉ. अनूप कालरा)

बारिश के समय में पशुओं का उत्तम प्रबंधन कैसे करें

–सबीन भोगरा

बारिश के मौसम में बीमार पशु द्वारा मिट्टी और पानी भी संक्रमित हो जाते हैं, जिसके संपर्क में आने से स्वस्थ पशुओं के संक्रमित होने की सम्भावना बढ़ जाती है। इसलिये रोगी पशु को स्वस्थ पशु से अलग रखें। इस मौसम में पशुओं में होने वाले प्रमुख संक्रामक रोग जैसे गलघोटू, लंगड़ा बुखार, खुरपका मुँहपका, न्यूमोनिया आदि हैं। परजीवी रोगों में बबेसिओसिस, थैलेरिओसिस आदि प्रमुख रोग हैं।

बारिश के नाम से ही एक सुनहरे मौसम की कल्पना करते हैं। भला बारिश किसे पसंद नहीं वो इंसान हो या फिर जानवर बारिश सभी को पसंद आती हैं पर ये भी केवल मौसम की बारिश ही होनी चाहिए, लेकिन जरूरत से ज्यादा नहीं होनी चाहिए, अन्यथा नुकसान भी कर सकती हैं। जब नुकसान करती है तो हम इंसान तो फिर भी इससे आसानी से बच जाते है पर इसकी चपेट में पालतू पशु आ जाते हैं, हमें बारिश से पहले ही कुछ ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे वो इस बारिश का मजा भी ले सके और इससे सुरक्षित भी रहे। जैसे कि

- बारिश से पहले ही हमे ढेर सारा चारा इकट्ठा रखना चाहिए।
- पशुओं के रहने के स्थान को साफ और सूखा रखना चाहिए।
- पशुओं की दवाइयों की भी उचित व्यवस्था रखनी चाहिए, जिससे बारिश से यदि बीमार भी हो तो जल्दी से दवा दे सके।

- पशुचिकित्सक से समय-समय पर सलाह भी लेनी चाहिए।
- खास बात ये है कि बारिश के मौसम में पशुओं को केवल बरसाती चारा ही देना चाहिए।

हम तो बोलकर भी सहायता ले सकते हैं पर वो ऐसा नहीं कर सकते कृपया करके हम सब को ही उनकी मदद करनी होगी।

बारिश के मौसम में बीमार पशु द्वारा मिट्टी और पानी भी संक्रमित हो जाते हैं, जिसके संपर्क में आने से स्वस्थ पशुओं के संक्रमित होने की सम्भावना बढ़ जाती है। इसलिये रोगी पशु को स्वस्थ पशु से अलग रखें। इस मौसम में पशुओं में होने वाले प्रमुख संक्रामक रोग जैसे गलघोटू, लंगड़ा बुखार, खुरपका मुँहपका, न्यूमोनिया आदि हैं। परजीवी रोगों में बबेसिओसिस, थैलेरिओसिस आदि प्रमुख रोग हैं।

पशुओं में होने वाले संक्रामक रोग जैसे खुरपका मुँहपका, गलघोटू तथा लंगड़ा बुखार प्रमुखता से बरसात के दिनों में गौवंश को प्रभावित करते है तथा कई बार पशुओं की जान भी चली जाती है। इन रोगों से बचाव हेतु बारिश से पहले टीकाकरण करना आवश्यक है।

बारिश के मौसम में पशुओं के रखरखाव में सावधानियां

- उपरोक्त बीमारियों को ध्यान में रखने के साथ-साथ पशुपालकों को वर्षा ऋतु में पशु प्रबंधन सम्बंधी बातों पर भी गौर करना चाहिए।
- बारिश के पहले पशुओं के पशुशाला की छत की मरम्मत कर दें, जिससे बारिश का पानी ना टपके।

- पशुशाला की खिड़कियाँ खुली रखें तथा गर्मी एवं उमस से बचने के लिये पंखों का उपयोग करें।
- इस मौसम में साफ सफाई का खास ख्याल रखें एवं पानी को एक जगह पर एकत्रित नहीं होने दें, जिससे मच्छर ना हों और परजीवी संक्रमण रोका जा सके।
- पशुशाला में पशु के मलमूत्र के निकासी का भी उचित प्रबंध हो। पशुशाला को दिन में एक बार फिनाइल के घोल से अवश्य साफ करें, जिससे बीमारी फैलाने वाले बैक्टीरिया कम हो सकें।
- बाड़े में और उसके आसपास कचरा और गंदगी इकट्ठा ना होने दें और उसके निकास की उचित व्यवस्था हो। नियमित अंतराल पर कीटनाशक को भी छिड़कें।
- पशुओं को ज्यादा शारीरिक थकावट ना होने दें और बार-बार धूप में ना लाएं।
- बारिश के मौसम में पशुओं को बाहर चरने के लिए नहीं भेजें, क्योंकि बारिश के मौसम में गीली घास पर कई तरह के कीड़े होते हैं, जो पशुओं के पेट में चले जाते हैं और शरीर को नुकसान पहुँचाते हैं।
- पशु को खेतों के समीप गड्ढे या जोहड़ का पानी पिलाने से परहेज करें, क्योंकि इस दौरान किसान खेतों में खरपतवार एवं कीटनाशक का इस्तेमाल करते है, जोकि रिसकर इनमें आ जाता है। कोशिश करें की पशु को बाल्टी से साफ एवं ताजा पानी पिलाएं।
- दाने का भंडारण नमी रहित जगह पर करें और ध्यान दें कि इस मौसम में दाने को 15 दिन से अधिक भंडार न करें।

बारिश से पहले पशुओं में टीकाकरण

टीकाकरण के द्वारा विश्व में करोड़ों पशुओं में विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाव संभव है। इस तरह पशुपालकों को अपने पशुओं का उचित टीकाकरण पशुचिकित्सक की सलाह पर शुरुआत में ही कर लेना चाहिए तथा प्रतिवर्ष पुनः टीकाकरण दोहराना चाहिए। गाय एवं भैंसों में खुरपका मुँहपका, गलघोंटू, टंगिया रोग आदि का टीका बारिश से पहले लगाया जाता है। भेड़ और बकरियों में भी मानसून की शुरुआत में पीपीआर और गलघोंटू का टीका लगाया जाता है।

मानसून के समय में वातावरण में आर्द्रता बढ़ जाती है। पशुशाला के अंदर गरमी, पशुओं का मलमूत्र और निष्कासित हवा में जीवाणुओं की संख्या बढ़ने से पशुओं में विभिन्न संक्रामक बीमारियों की संभावना बढ़ जाती है। वातावरण में आर्द्रता की अधिकता होने के कारण पशुओं की आंतरिक रोगों से लड़ने की क्षमता पर भी असर पड़ता है। परिणामस्वरूप पशु अनेक रोगों से ग्रसित हो जाता हैं। इसी मौसम के दौरान परजीवियों की संख्या में भी अत्यधिक वृद्धि हो जाती है, जिससे पशुओं में परजीवी रोग भी हो सकते हैं। इन रोगों के प्रकोप से पशु का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है, जिससे पशुपालकों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

परजीवियों का प्रकोप

बारिश के मौसम में प्रायः परजीवियों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हो जाती हैं। इससे पशुओं को शारीरिक रोगों का सामना करना पड़ता हैं। परजीवी प्रायः दो प्रकार के होते हैंः-

1. परजीवी-जैसे पेट के कीड़े, कृमि आदि।
2. बाह्य जीवी-चीचड़, खलील, जूं आदि।

लक्षण–रोगग्रसित पशु में सुस्ती, कमजोरी, अनीमिया (खून की कमी) एवं दूध में कमी देखने को मिलती है। पशु को पाचन प्रक्रिया में शिकायत रहती है, जिससे पेट में दर्द और पतला गोबर आता है।

उपचार–पशुचिकित्सक की सलाह से पशुओं को उनके वजन के अनुसार परजीवीनाशक दवा नियमित रूप से दो बार पिलायें।

बचाव–बारिश के मौसम में पशुओं को तालाब के किनारे न लेकर जाएं। इसके साथ-साथ तालाब की किनारों वाली घास न खिलाएं, क्योंकि ये घास कीड़ों के लार्वा से ग्रस्त होती है। जो कि पेट में जाकर कीड़े बन जाते हैं और अनेक विकार उत्पन्न करते हैं।

खाज-खुजली

बारिश के मौसम में अक्सर पशुओं में खाज-खुजली की शिकायत होती है इसका मुख्य कारण पशुशाला में गंदगी का होना है। इस रोग में पशु की त्वचा पर अत्यंत खुजलाहट होती है, जिसकी वजह से त्वचा मोटी होकर मुरझा जाती है एवं पशु के खुजली करने पर त्वचा छिल जाती है और उस जगह के सारे बाल झड़ जाते हैं। कभी-कभी इन जगह पर जीवाणुओं के संक्रमण से दुर्गन्ध भी आती है।

चीचड़ बारिश के मौसम में अक्सर पशुओं में चीचड़ लग जाते हैं ये चीचड़ पशु का खून चूसते है। इससे खून की कमी हो जाती है तथा कई प्रकार के रोग भी फैलाते हैं जैसे बबेसिओसिस, थैलेरिओसिस आदि।

उपचार–पशुचिकित्सक की सलाह से कीटनाशक दवा को पशु के ऊपर लगायें तथा पशुशाला में भी छिड़काव करायें।

गलघोटू बीमारी (एच. एस)

बारिश की वजह से पशु (मुख्यतः भैंसों) की आन्तरिक रोग-प्रतिरोधक क्षमता घट जाती है। इससे उनके शरीर में मौजूद बीमारी के जीवाणु भयंकर रूप धारण कर लेते हैं। इस बीमारी में पशु तेज ज्वर से पीड़ित होता है। उसके गले में सूजन आ जाती हैं। इस कारण उसे साँस लेने में तकलीफ होती है और अंत में दम घुटने से मौत हो जाती हैं।

उपचार–पशुपालकों को रोग-ग्रसित पशु को दूसरे स्वस्थ पशुओं से अलग कर पशु चिकित्सक द्वारा उपचार कराएं।

बचाव एवं रोकथाम–वर्षा शुरू होने से पहले पशुपालक को नजदीकी पशु चिकित्सालय में जाकर अपने पशुओं को गलघोटू रोग का टीका लगवाये ।

लंगड़ा बुखार/तीन दिवसीय बुखार

पशु तीन दिन तक तेज बुखार से ग्रसित रहता हैं। उसे खड़े रहने में कमजोरी महसूस होती है, जिससे वह बैठा रहता हैं।

उपचार–मीठा सोडा तथा सोडियम सैलिसिएट को बराबर मात्रा में पिलाने से पशु को आराम मिलता हैं।

चेचक रोग (स्माल पॉक्स)

यह रोग पशु आवास में गन्दगी के रहने से होता हैं। इसमें पशु की ल्योटी (अयन) पर लाल रंग के दाने निकलने के साथ-साथ तेज बुखार भी होता हैं।

उपचार–थनों एवं ल्योटी को पहले पोटेशियम पर्मैगनेट (लाल दवा) के घोल से धोएं और उसके पश्चात मलहम लगाने से पशु को आराम मिलता हैं।

उपरोक्त बीमारियों को ध्यान में रखने के साथ-साथ पशुपालकों को पशु प्रबंधन सम्बन्धी बातों पर भी गौर करना चाहिए जोकि निम्नलिखित हैं।

- पशुशाला की खिड़कियाँ खुली रखनी चाहिए। बिजली के पंखों का प्रयोग करना चाहियें, जिससे पशुओं को उमस एवं गर्मी से राहत मिल सकें।
- पशुशाला में पशु के मलमूत्र के निकासी का उचित प्रबंध होना चाहियें। पशुशाला को दिन में एक बार फिनाइल के घोल से अवश्य साफ करना चाहिए, जिससे दुर्गन्ध फैलाने वाले बैक्टीरिया का असर कम हो सकें।
- पशु को खेतों के समीप गड्ढे या जोहड़ का पानी पिलाने से परहेज करें, क्योंकि इस दौरान किसान खेतों में खरपतवार एवं कीटनाशक का इस्तेमाल करतें है, जोकि रिसकर इन में आ जाता हैं। कोशिश करें की पशु को बाल्टी से साफ एवं ताजा पानी पिलाएं।
- पशु को हरा चारा अच्छी तरह झाड़ कर खिलाएं, क्योंकि बरसात के समय घोंघों का प्रकोप अधिक होता है। यह चारे के निचले तने एवं पत्तियों पर चिपके होते हैं। घोंघें मुख्यतः फ्लूक के संरक्षक होते हैं। इसलिए पशुपालकों को सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि पशुओं का चारा घोंघों से ग्रसित न हों।
- सरकारी अस्पताल में जाकर पशु का टीकाकरण अवश्य करवाएं जैसे गलघोंटू व मुँह खुरपका रोग के टीके इत्यादि।
- 15 दिन के अन्तराल पर परजीवियों की रोकथाम हेतु कीटनाशक दवाइयों को पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार प्रयोग करें।
- यदि इस मौसम में अन्य कोई विकार पशुधन में उत्पन्न होते है, तो तुरंत पशु चिकित्सक की सलाह लेकर उपचार करें।

□□

पशुधन विशेषज्ञ, हरियाणा

अगर पशु ने खाया विषाक्त चारा, सताएंगे उसे दस्त, बदहज़मी और अफारा।

AYURVET™

आयुर्वेट के उत्पाद, पाचन समस्याओं से दिलाएं निदान

डायरोक
ड्राई सस्पेंशन

दस्त की शीघ्र एवं प्रभावी रोकथाम के लिए

विशेषताएं

- दस्त की शीघ्र रोकथाम करे
- पतले गोबर को ठीक करे
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाए

सेवनविधि

- 30 ग्राम, पांच गुना पानी में अच्छी तरह मिलाकर पशुओं को दिन में दो बार पिलाएं
- गंभीर स्थिति में हर 6 घंटे के बाद पिलाएं

पैक

30 ग्राम

1 किलोग्राम

पचोप्लस
बोलस

अपाचन व अरुचि में प्रभावशाली

विशेषताएं

- पाचन क्रिया को सुदृढ़/सुचारू करे
- बुखार व संक्रामक रोगों के कारण कम हुई भूख को ठीक करे
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों की संख्या बढ़ाने तथा उनके विकास के लिए रुमैन पी.एच. को नियंत्रित करे

सेवनविधि

- दो बोलस दिन में दो बार, 2-3 दिनों तक अथवा पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार दें।

पैक

4 बोलस की एक स्ट्रिप

अफानिल
इमलशन

अफारा की परेशानी से राहत के लिए

विशेषताएं

- पशु के पेट (रुमैन) में बने अफारा एवं झाग को कम करे
- पशु के पेट (रुमैन) में रुकी गैस को जल्द बाहर निकाले
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाए

सेवनविधि

- 50 मि.ली. दिन में दो बार, 2 दिनों तक पिलाये अथवा पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार दें

पैक

100 मि.ली.

कोविड महामारी के समय में डेरी पशुओं का सामान्य प्रबंधन

-डॉ संजय कुमार मिश्र

सबसे पहले पशुपालकों को यह समझना जरुरी है कि किसी को खांसी, सांस लेने में तकलीफ आदि जैसे लक्षण होने पर ही उसे कोरोना का संक्रमण हो यह जरुरी नहीं है, बल्कि यह विषाणु, स्वस्थ दिखने वाले किसी भी व्यक्ति के शरीर में मौजूद हो सकता है तथा उन्हें संक्रमित कर सकता है। इसलिए वे खुद को व अपने पशुओं को संक्रमण संभावित स्थानों व इंसानों से दूर रखें।

हालाँकि अभी तक ऐसा कोई ठोस प्रमाण नहीं मिला है कि पशु इस वायरस को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, परन्तु ऐसी सम्भावना हो सकती है कि कुछ विशेष परिस्थितियों में यह वायरस पशुओं से इंसानों एवं इंसानों से पशुओं में भी फैल सकता है। इसलिए सभी पशुपालकों को सावधानी बरतते हुए निम्न बातों का सदैव ध्यान रखना चाहिए, जिससे वे अपने पशु व अपने प्रियजनों को कोरोना जैसी महामारी से बचा सकें:-

- पशुशाला में गैरजरूरी व्यक्तियों के आवागमन को तत्काल प्रतिबंधित कर दें।
- अपने पशुधन को भी सार्वजानिक/खुले स्थानों पर न बांध कर अपने घर/बाड़े में ही बाँधे।
- यदि पशु बीमार है, तो घर पर ही प्राथमिक उपचार करें या फोन पर पशुचिकित्सक से परामर्श लेवें और बहुत जरुरत होने पर ही पशुचिकित्सक को अपने घर पर बुलाएं।
- जब भी आप पशुशाला में जाएं तो अपने मुँह व चेहरे को मास्क या कपड़े से ढक कर ही जाएं, ताकि यह वायरस सांस के द्वारा आपके शरीर में प्रवेश न कर सके।
- पशुशाला के द्वार पर सैनिटाइजर या साधारण साबुन व पानी रखें तथा पशुशाला में प्रवेश से पूर्व व निकलते समय अपने हाथ अच्छे से धोएं। उसके पश्चात् ही अपने मास्क आदि को छुएं।
- यदि अस्वस्थ महसूस कर रहे हो तो पशुशाला में न जाए व स्वस्थ होने तक सामाजिक दूरी बना कर रहें।
- बड़ी पशुशाला में यदि एक से अधिक श्रमिक कार्य करते है तो रोजमर्रा के कार्यों के दौरान उन्हें सामाजिक दूरी (कम से कम 2 गज) बनाए रखने व हर 2-3 घंटे के पश्चात् हाथ धोने के लिए प्रेरित करे।
- पशुशाला में कोई भी कर्मचारी बाहर से न आये तथा पशुपालक उनके रहने, खाने व रोजमर्रा के कार्यों की समुचित व्यवस्था कार्यस्थल पर ही करें।
- पशुशाला में कार्य करने वाले सभी व्यक्तियों के पशुशाला व घर के लिए अलग अलग कपड़े होने चाहियें।
- पशुशाला में उपयोग होने वाले सामान व उपकरण को नियमित रूप से साफ करे।
- पशुओं के बाड़े को 1 प्रतिशत हाइपोक्लोराइट घोल के साथ रोजाना दो बार साफ करें।
- धातु के बर्तनों को किसी डिटर्जेंट के घोल से साफ करें या 70 प्रतिशत अल्कोहल भी उपयोग कर सकते है।
- स्वच्छ दूध सुनिश्चित करने के लिए अयन व थनों को एंटीसेप्टिक घोल जैसे पोटासियम परमैंगनेट (लाल दवा) या नीम की पत्तियां उबले हुए पानी से धो लेने के पश्चात् ही दूध दोहन करें।
- यदि सुरक्षित तरीके से दूध नहीं बेच पा रहे हैं, तो घी आदि बनाकर संग्रहित कर ले व छाछ आदि पशुओं को पिलाएं।
- सभी नमस्कार करने की आदत डालें व हाथ मिलाने से बचे।
- पशुशाला से सम्बंधित सभी व्यक्तियों के फोन में आरोग्य सेतु अप्लीकेशन सुनिश्चित करे व समय समय पर उसके द्वारा अपने स्वास्थ्य की जांच करते रहें, जितना हो सके नकद लेन-देन की अपेक्षा ऑनलाइन माध्यम ही अपनाएं।

इन सभी उपरोक्त बातों का ध्यान रखने से हम कोरोना महामारी से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है व स्वयं एवं अपने परिवार को सुरक्षित भविष्य दे सकते हैं। □□

पशु चिकित्सा अधिकारी
चौमुहां मथुरा

दुधारू पशुओं में ट्राइकोमोनिएसिस संक्रमण

-डॉ. मेघा पाण्डे

ट्राइकोमोनिएसिस एक यौन संचारित संक्रामक बीमारी है, जोकि एक परजीवी (प्रोटोजोया) ट्राइकोमोनस के कारण होती है। यह रोग गायों में 3 महीने के अंदर गर्भपात करवाने के लिए विशेष रूप से जिम्मेदार होता है । ऐसे में बहुत जरूरी हो जाता है कि हमारे पशुपालक इस बारे में जागरूक हो ताकि वह अपने पशुओं को स्वस्थ रखकर अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकें।

ट्राइकोमोनिएसिस एक यौन संचारित संक्रामक बीमारी है जोकि एक परजीवी (प्रोटोजोया) ट्राइकोमोनस के कारण होती है। यह रोग गायों में 3 महीने के अंदर गर्भपात करवाने के लिए विशेष रूप से जिम्मेदार होता है ।

कारण

- ट्राइकोमोनिएसिस संक्रमित सांड द्वारा गर्भधारण।
- ट्राइकोमोनिएसिस संक्रमित सांड का वीर्य (एआई द्वारा)।
- यह जननांग स्पर्श के माध्यम से भी फैल सकता है।

लक्षण

- गर्भकाल के शुरू में (साधारणतया 3 महीने के अंदर अंदर) बच्चेदानी में पीक/पस।
- योनिद्वार से बदबूदार मवाद युक्त स्राव।
- पशुओं में गर्भपात।
- दूध उत्पादन में कमी।

उपचार

यदि गर्भपात के लक्षण नजर आने लग गए तो गर्भपात को रोकना संभव नहीं होता। अतः निम्न बातों का ध्यान रखें:-

- गाभिन पशु के बाड़े को प्रतिदिन कीटाणुनाशक घोल से साफ करें।
- हाल ही में गर्भपात हुए पशु को बाकी गाभिन पशुओं से दूर रखें।
- यदि किसी गाय में गर्भपात हुआ है, तो मृत बच्चे को फेंके नहीं तथा उसके सेंपल की उचित जांच करवाएँ।
- गर्भपात की संभावनाओं को कम करने के लिए पशु को कृत्रिम गर्भाधान द्वारा ही गाभिन करवाएँ।
- यदि किसी पशु ने बच्चा गिरा दिया हो तो उसे अगले 3-4 महीने तक गाभिन न करवाएँ।
- गर्भपात होने की स्थिति में जेर को मिट्टी में दबा दें और फिनाइल से बाड़े की सफाई करें।
- पशु को जेर या निकलते हुए स्राव को खाने न दें।
- गर्भपात के लक्षण दिखते ही निकटतम पशुचिकित्सालय में संपर्क करें।

□□

वैज्ञानिक (पशु पुनरुत्पादन), भा. अनुप केंद्रीय गोवंश अनुसन्धान संस्थान, मेरठ छावनी- 250001 (उत्तर प्रदेश), मोबाइल: 9410971314

AYURVET

GES
ALTERNATIVE GREEN ENERGY SOLUTIONS

ARF AYURVET RESEARCH FOUNDATION

किसान भाइयों के लिए खुशखबरी

धान की नर्सरी

गन्ने की नर्सरी

हरा चारा

अब खरीदें और पाएं सब्सिडी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: 7985318152

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक एक, लाभ अनेक

पौधे को उगाने के लिए सामान्यतः बीज को मिट्टी में डाला जाता है, जबकि हाइड्रोपोनिक्स तकनीक में पौधे को बिना मिट्टी के उगाया जाता है। मिट्टी पौधों के लिए पोषक पदार्थों के संवाहक का काम करती है, लेकिन मिट्टी पौधे की वृद्धि के लिए स्वयं जरूरी नहीं होती। यदि पौधों को जरूरी तत्व पानी में घोलकर दें, तो पौधों की जड़ें उन्हें प्रयोग करने में सक्षम होती हैं एवं पौधों की वृद्धि सामान्य रहती है।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स के लाभ

- इस तकनीक में जमीन एवं पानी की बहुत कम जरूरत पड़ती है।
- इस विधि में वातावरणीय प्रदूषण भी घट जाता है, क्योंकि पोषक तत्वों का उपयोग पूरी तरह होता है।
- पौधों में कीड़े और बीमारियां लगने की संभावना कम-से-कम होती है, क्योंकि इस विधि में पौधों का विकास नियंत्रित वातावरण में होता है।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक आने वाले समय की जरूरत बनने वाली है क्योंकि बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ फसलों का बढ़ता उत्पादन हमारी प्राथमिकता है।
- आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक को आयुर्वेट के वैज्ञानिकों द्वारा निरंतर आगे बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है और उन्हें इसके अनुकूल परिणाम भी मिल रहे हैं।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स के उपयोग

- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से धान की नर्सरी तैयार करना।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से साग-सब्जी के पौधों की नर्सरी।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से औषधीय व मसाले वाले पौधों की नर्सरी।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से हरे चारे का उत्पादन।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से व्हीट ग्रास का उत्पादन।

पशुओं में कीटनाशकों की विषाक्तता का दुष्प्रभाव एवं उनका प्राथमिक उपचार

-डॉ संजय कुमार मिश्र

किसानों द्वारा कृषि रसायनों का फसलों पर छिड़काव सामान्यता फसल की गुणवत्ता तथा उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए किया जाता है। इन रासायनिक पदार्थों का मानकता के अनुरूप सही रूप में प्रयोग नहीं करने पर मनुष्य और पशुओं के शरीर में पहुंचकर घातक प्रभाव प्रकट करते हैं, जिसके फलस्वरूप पशु की कार्य एवं उत्पादन क्षमता का कम होना तथा स्वास्थ्य का ह्रास होने की संभावना बनी रहती है।

किसानों द्वारा कृषि रसायनों का फसलों पर छिड़काव सामान्यता फसल की गुणवत्ता तथा उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए किया जाता है। यह रासायनिक कीटनाशक भौतिक एवं जैविक पदार्थ होते हैं, जिनको अवांछनीय पौधों को हटाने तथा फसलों को नष्ट करने वाले कीड़ों को मारने हेतु प्रयोग किया जाता है। इन रासायनिक पदार्थों का मानकता के अनुरूप सही रूप में प्रयोग नहीं करने पर मनुष्य और पशुओं के शरीर में पहुंचकर घातक प्रभाव प्रकट करते हैं, जिसके फलस्वरूप पशु की कार्य एवं उत्पादन क्षमता का कम होना तथा स्वास्थ्य का ह्रास होने की संभावना बनी रहती है।

कृषि रसायनों का उपयोग विज्ञान द्वारा दिए गए मापदंड एवं अत्यंत सावधानी से करना चाहिए। यह रासायनिक पदार्थ पशुओं के शरीर में मुख, श्वास अथवा त्वचा द्वारा अवशोषित होकर पहुंचते हैं। इन पदार्थों में मुख्यतः कीटनाशक, कृमि नाशक, खरपतवारनासी, कवकनाशी तथा चूहामार दवा प्रमुख है।

विष के प्रमुख स्रोत

- कीटनाशक की विषाक्तता दुर्घटनावश कीटनाशक छिड़कावयुक्त संक्रमित चारे को खाने से।
- किसी शत्रु द्वारा जानबूझकर हानिकारक रासायनिक विष पशुओं को खिलाने से।
- कीटनाशकों के खाली डिब्बे को सही ढंग से साफ न करना तथा इन पात्रों में पशुओं को चारा खिलाने तथा पानी पिलाने से।
- कीटनाशकों का फसलों पर छिड़काव करने के तुरंत बाद पशुओं का चरने आना या चरना अथवा छिड़के हुए रसायन पदार्थ के संपर्क में आने से त्वचा द्वारा अवशोषित होना।
- कीटनाशकों तथा पशुओं के चारे को एक साथ भंडारित करने से।
- कीटनाशक का छिड़काव पशुओं के आवास स्थल पर होने वाले किलनी, जूं, अथवा पिस्सू आदि को मारने के लिए तथा इनका पशुओं द्वारा चाटने तथा संपर्क में आने से।
- बाह्य परजीवियों को मारने वाली औषधियों को उसके शरीर पर लगाने पर व उसको पशुओं के द्वारा चाटने पर।
- नदियों, तालाब तथा झरने के पानी में रासायनिक तत्वों का मिश्रण उद्योगों द्वारा छोड़े जाने पर तथा इस दूषित जल को पशुओं द्वारा पान करने पर।
- दूषित जल, भोजन एवं धुएं के संपर्क में आने से।

रासायनिक गुणों के आधार पर कीटनाशकों की श्रेणियां

1. ऑर्गेनोफॉस्फेट कंपाउंड

पैराथिऑन, मेलाथियान, सुमिथियान, क्लोरपायरी फास, डाईक्लोरोफास, कोमा फाश इत्यादि।

विषाक्तता के लक्षण:

- ऑर्गेनोफॉस्फेट कंपाउंड विष की विषाक्तता के कारण पशुओं में अत्याधिक उत्तेजना, बेचैन होना, दांतों का किटकिटाना, पीछे की तरफ चलना, दीवार पर चढ़ना, छलांग लगाना, शरीर का तापमान बढ़ना, झाग दार लार बहना, अतिसार होना आंखों की पलकों का फड़कना, पुतलियों का फैलना तथा बार-बार मूत्र विसर्जन करना इत्यादि।

रोग निदान:

- ऑर्गेनोफॉस्फेट की विषाक्तता की पहचान पशुओं में निम्न प्रकार से करना चाहिए-

क. विषाक्तता की जानकारी पीड़ित पशु के मालिक द्वारा होना।

ख. विषाक्तता के लक्षणों के आधार पर।

ग. रासायनिक कीटनाशक की पहचान जीवित पशु के दूध तथा रक्त की जांच द्वारा एवं मृत पशु के यकृत तथा गुर्दे की जांच द्वारा।

बचाव तथा उपचार

- विष संक्रमित, चारे को पशुओं के खाने के स्थान से हटाना।
- पीड़ित पशु को शांत, स्वच्छ, खुले एवं हवादार स्थान पर रखना चाहिए।
- एट्रोपिन सल्फेट की मात्रा छोटे तथा बड़े पशुओं जैसे गाय, भैंस, भेड़, घोड़े, सूअर में 0.2 से 0.5 मिलीग्राम प्रति किलो शरीर भार के अनुसार देना चाहिए। इसकी एक चौथाई मात्रा इंट्रावेनस तथा तीन चौथाई मात्रा इंटरामस्कुलर अथवा सबक्यूटेनियस इंजेक्शन द्वारा देना चाहिए। इस दवा को 3 से 4 घंटे के अंतर पर पुनः देना चाहिए, जब तक की विषाक्तता के लक्षण समाप्त नहीं हो जाते। अत्याधिक उत्तेजित पशु को शांत करने के लिए पेंटोबार्बिटल सोडियम अथवा डायजेपाम लगाना चाहिए।
- कोलीनस्टरेज रिएक्टीवेटर जैसे कि 2-पाम, 2-डाम, ओवीडॉग्जीम, जैसी औषधियों का प्रयोग विषाक्तता होने के 24 से 36 घंटे के अंदर करना चाहिए। गाय एवं भैंस को 25 से 50 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम शरीर के भार के अनुसार धीरे धीरे इंट्रावेनस अथवा इंटरमस्कुलर लगाना चाहिए।
- एक्टिवेटेड चारकोल को 2 किलोग्राम पहले दिन इसके पश्चात 1 किलोग्राम रोजाना 2 हफ्तों तक सेवन कराना चाहिए। कैल्शियम बोरोग्लूकोनेट इंट्रावेनस देना चाहिए।
- अवशोषित विष को शरीर से बाहर उल्टी द्वारा एपोमार्फिन हाइड्रोक्लोराइड की मात्रा गाय एवं भैंस में 250 से 500 ग्राम तक सेवन कराना चाहिए।

2. ऑर्गेनोक्लोरीन कीटनाशक

डीडीटी, एडरिन, एल्डरिन, एंडोसल्फान, क्लोरपायरिफॉस, डाईक्लोरो फास, कोमाफास इत्यादि।

इस कीटनाशक की विषाक्तता पशुओं में सामान्यता कीटनाशक छिड़कावयुक्त फसलों के संपर्क में आने से होती है। क्योंकि यह कीटनाशक पशुओं की त्वचा द्वारा अवशोषित हो जाते हैं। इस विष के दुष्प्रभाव के कारण पीड़ित पशु में निम्न लक्षण जैसे अत्यधिक लार बहना, पसीना आना, अश्रु निकलना, बार-बार मूत्र विसर्जित करना, अतिसार होना, पेट में दर्द होना, रक्तचाप कम हो जाना, शरीर का तापमान कम हो जाना, नेत्र पुतलियों का संकुचित होना, अत्यधिक बेचैन होना, श्वास लेने में कठिनाई होना हृदय स्पंदन का कम होना तथा अंत में पशु की मृत्यु होना।

बचाव तथा उपचार

एट्रोपिन सल्फेट की मात्रा 0.2 से 0.5 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम शरीर के भार के अनुसार नॉरमल सलाइन में मिश्रित करके देना चाहिए। कैल्शियम बोरोग्लूकोनेट 200 से 400 मिलीलीटर इंट्रावेनस नॉरमल सलाइन में मिश्रित करके देना चाहिए। पशु के शरीर को स्वच्छ जल तथा साबुन से धीरे धीरे रगड़ रगड़ कर धोना चाहिए।

3.कारबामेट कंपाउंड

कारबारिल, एलडीकारब, कार्बोफयूरान इत्यादि।

इन पदार्थों का उपयोग पशुओं के शरीर पर बाह्य परजीवियों को हटाने के लिए किया जाता है। इनके दुष्प्रभाव के लक्षण सामान्यता ऑर्गेनोफॉस्फेट कंपाउंड की तरह होते हैं तथा इनका उपचार भी आर्गनो-फास्फेट कंपाउंड की तरह करते हैं,

परंतु इनके उपचार के दौरान कोलीनस्ट्रेज रिएक्टीवेटर का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

4.पायरेथ्रीन एवं पायरेथ्राइड कंपाउंड

एल्थरिन, परमैथरीन, साइपरमैथरीन, फ्लूमथ्रीन इत्यादि।

इनका उपयोग पशुओं के शरीर पर बाह्य परजीवी को हटाने के लिए किया जाता है। इनकी विषाक्तता के लक्षण तथा प्राथमिक उपचार ऑर्गेनोक्लोरीन की तरह है, परंतु इनकी विषाक्तता के उपचार के दौरान फीनोथायजिन ट्रेंकुलाइजर तथा तेलयुक्त परगेटिव नहीं देना चाहिए।

5. खरपतवारनाशी कीटनाशक

2, 4 डी, 2, 4, 5 टी, एटराविन, मोनोयूरोन, डाईयूरोन, पैराक्वेट, डाईकवेट, सिमाविन इत्यादि।

इन खरपतवारनाशी पदार्थों का उपयोग किसानों द्वारा अवांछनीय पौधों को हटाने के लिए किया जाता है। इनकी विषाक्तता पशुओं में दुर्घटनावश होती है। इन रासायनिक पदार्थों के कारण पीड़ित पशु के शरीर का तापमान बढ़ना, भूख न लगना, रूमैन का स्थिर हो जाना, मुंह में छाले पड़ना, अतिसार होना, पेट फूलना तथा सांस में तकलीफ होना इत्यादि है।

उपचार

- पीड़ित पशु को शांत तथा हवादार कमरे में रखना चाहिए तथा उसके शरीर के तापमान को कम करने के लिए ठंडे पानी से नहलाना चाहिए।
- पीड़ित पशु के श्वास क्रिया को सुचारू रूप से चलाने के लिए कृत्रिम ऑक्सीजन देना चाहिए।
- बड़े पशु जैसे गाय, भैंस, बकरी, भेड़ को मिथाईलीन सलूशन (2 से 4 प्रतिशत)10 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम इंट्रावेनस 8 घंटे के अंतर पर 24 से 48 घंटे तक देना चाहिये। विटामिन सी 5 से 10 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम शरीर के भार के अनुसार इंट्रावेनस 24 से 48 घंटे तक देना चाहिए।
- शरीर के तापमान को कम करने वाली औषधि भूल कर भी नहीं देना चाहिए अन्यथा विष की विषाक्तता और बढ़ जाती है। □□

पशु चिकित्सा अधिकारी चौमुंहा मथुरा

स्वस्थ पशु प्रबंधन से स्वच्छ दुग्ध उत्पादन

-डॉ. प्रणय भारती एवं डॉ. विशाल मेश्राम

स्वच्छ दूध से हमारा तात्पर्य ऐसे दूध से है, जिसे स्वस्थ गाय या भैंस के थन से प्राप्त किया गया हो और उसमें अच्छी खुशबू के साथ-साथ कम से कम जीवाणु हों और बाह्य पदार्थों, जैसे मिट्टी, धूल, मक्खियों तथा रोगजनकों से मुक्त हो। स्वच्छ दूध की गुणवत्ता को लम्बे समय तक बनाए रखा जा सकता है तथा उसे संरक्षित करने की समयावधि भी अधिक होती है। शुद्ध दूध की व्यावसायिक कीमत अधिक होती है और उससे उच्च गुणवत्तायुक्त दुग्ध पदार्थों को बनाया जा सकता है। इसलिए दूध की शुद्धता को सुनिश्चित करने के लिए दूध में होने वाली गंदगी को दुग्ध उत्पादन स्तर पर ही नियंत्रित किया जाना चाहिए, क्योंकि शुद्ध दूध न केवल उपभोक्ता के लिए सुरक्षित हैं, बल्कि दुग्ध उत्पादन की आर्थिक दृष्टि से भी फायदेमंद हैं।

स्वच्छ दूध से हमारा तात्पर्य ऐसे दूध से है, जिसे स्वस्थ गाय या भैंस के थन से प्राप्त किया गया हो और उसमें अच्छी खुशबू के साथ-साथ कम से कम जीवाणु हों और बाह्य पदार्थों, जैसे मिट्टी, धूल, मक्खियों तथा रोगजनकों से मुक्त हो। स्वच्छ दूध की गुणवत्ता को लम्बे समय तक बनाए रखा जा सकता है तथा उसे संरक्षित करने की समयावधि भी अधिक होती है। शुद्ध दूध की व्यावसायिक कीमत अधिक होती है और उससे उच्च गुणवत्तायुक्त दुग्ध पदार्थों को बनाया जा सकता है। इसलिए दूध की शुद्धता को सुनिश्चित करने के लिए दूध में होने वाली गंदगी को दुग्ध उत्पादन स्तर पर ही नियंत्रित किया जाना चाहिए, क्योंकि शुद्ध दूध न केवल उपभोक्ता के लिए सुरक्षित हैं, बल्कि दुग्ध उत्पादन की आर्थिक दृष्टि से भी फायदेमंद हैं।

स्वच्छ दुग्ध का उत्पादन कैसे करें

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के तरीकों का वर्णन करने से पहले हमें दूध को दूषित करने वाले स्रोतों के बारे मे पता होना आवश्यक है। दूध को दूषित करने वाले स्रोतों को मुख्यतः दो भागों मे बांटा गया है।

1. आंतरिक कारक-आंतरिक कारकों में पशु के थन से होने वाली गंदगी और थनैला रोग मुख्य हैं। दुहन के शुरूआती दूध में जीवाणुओं की संख्या अधिक होती है, इसलिए शुरूआती एक दो छांछ को हटाना अच्छा रहता है।

2. बाह्य कारक-बाह्य कारकों मे पशु का शरीर, दूध दूहने का स्थान, ग्वाला, आहार व पानी मुख्य हैं। इसके साथ-साथ दूध संग्रहण में उपयुक्त होने वाले बर्तनों एवं उपकरणों से भी दूध के दूषित होने की सम्भावना रहती है।

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के उपाय

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन हेतु इन तरीकों को अपनाया जा सकता है।

- डेरी फार्म पर आहार, आवास एवं स्वास्थ्य पशु प्रबंधन।
- दूध के संग्रह हेतु उपयोग किए जाने वाले उपकरणों एव बर्तनों की साफ-सफाई।
- दूध दूहने की अच्छी आदतें।

- दूध के भंडारण, वितरण एवं कूलिंग की समुचित व्यवस्था।

पशु आहार प्रबंधन

डेरी पशुओं को संतुलित आहार दिया जाना चाहिए, जिसमें हरे चारे, सूखे और सांद्रण का उचित लवण भी दिया जाना चाहिए। चारे में कवक संक्रमण को रोकने के लिए चारे का भंडारण सूखे स्थान पर किया जाना चाहिए। पशु आहार को कीटाणुओं और कवकों के संदूषण से बचाया जाना चाहिए। चारे की कमी के दौरान पशुओं को सूखा चारा जैसे सूखी घास या भूसा दिया जाना चाहिए। साथ ही साथ पशु राशन में खनिज लवण व विटामिन भी दिया जाना चाहिए, ताकि इनकी कमी को पूरा किया जा सके। गाय या भैंस को ब्यांत के आसपास की अवधि में विटामिन ई और सिलेनियम दिया जाना चाहिए, ताकि पशु थन स्वास्थ्य को सुधारा जा सके। पशु को दूध निकालने के एक घंटे पहले चारा दिया जाना चाहिए, ताकि दूध में चारे के द्वारा होने वाली गंदगी से बचा जा सके, तथा पशु को दूध निकालने के दौरान व्यस्त रखने के लिए सांद्रित मिश्रण दिया जाना चाहिए। दूध निकालते समय पशु को साइलेज और गीला चारा नहीं देना चाहिए, क्योंकि इससे दूध में साइलेज की गंध आने की सम्भावना रहती है।

पशु आवास प्रंबधन

पशु आवास से भी दूध के दूषित होने की सम्भावना रहती है, इसलिए पशु आवास का साफ-सुथरा होना अति आवश्यक है। पशु आवास दूध को दूषित करने वाले कारकों जैसे बाहरी पशुओं, व्यक्तियों, वायु, वर्षा और अधिक गर्मी से रक्षा प्रदान करता है। अतः दूध की गुणवत्ता को भी बनाए रखने में मदद करता है। दूध निकालने की जगह में पर्याप्त हवा का आदान-प्रदान होना चाहिए तथा प्रकाश की भी व्यवस्था होनी चाहिए। जल निकासी की भी पर्याप्त व्यवस्था की जानी चाहिए। नमी वाले स्थानों में फर्श को सूखा रखने के लिए बुझे चूने का इस्तेमाल किया जा सकता है। पशुओं को पीने के लिए साफ पानी 24 घंटे उपलब्ध होना चाहिए। डेरी फार्म और पशु आवास की साफ-सफाई के लिए भी पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध होना चाहिए। पशु आवास की छत अच्छी होनी चाहिए और पर्याप्त मात्रा में हवा का आदान-प्रदान होना चाहिए। बन्द बाड़ों को आरामदायक बनाने हेतु पर्याप्त ऊँचाई होनी चाहिए। यदि खुला बाड़ा है, तो उसकी फर्श साफ व शुष्क होनी चाहिए। पशु के गोबर और बचे हुए चारे को हटाने का प्रंबध किया जाना चाहिए।

पशु स्वास्थ्य

स्वच्छ दूध और लाभकारी डेरी के लिए पशु स्वास्थ्य पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। बीमार पशु से प्राप्त दूध में हानिकारक जीवाणु होते हैं, जो दूध के गुणवत्ता व उसके भंडारण की अवधि को कम कर देते हैं। पशुओं को छुआछूत बीमारियों जैसे खुरपका मुँहपका, टी.बी. और थनैला के प्रति नियमित जाँच होनी चाहिए। जो पशु बीमारियों से ग्रसित हों अलग रखना चाहिए। पशु आवास को संक्रमण से मुक्त करने के लिए रोगाणुनाशक का प्रयोग किया जाना चाहिए। दुहन के दौरान थन और थनैला रोग के लिए नियमित जांच करना चाहिए। डेरी पशुओं में खुरपका-मुँहपका और एन्थ्रैक्स के खिलाफ नियमित टीकाकरण कराया जाना चाहिए। शुद्ध दूध के साथ-साथ पशु की साफ-सफाई भी अति आवश्यक है। पशुओं की त्वचा दूध को दूषित करने वाले जीवाणुओं को अधिक सतह प्रदान करते है। इसलिए पशु के पिछले हिस्से के बालों, पैर व पूँछ के बालों को नियमित अंतराल पर काटते रहना चाहिए, जिससे धूल और गोबर को चिपकने से बचाया जा सके। इसके अलावा यदि थन साफ दिखाई दे रहा है तो भी उसे अच्छी तरह से साफ किया जाना चाहिए।

दुग्ध उपकरणों व बर्तनों की साफ-सफाई

डेरी उपकरणों व बर्तनों की साफ-सफाई व देखभाल शुद्ध दुग्ध उत्पादन के लिए सबसे कारगर तरीका है। सामान्यतः दुग्ध उपकरणों जैसे दुहान (मिल्किंग), मशीन, दुग्ध टैंक आदि को दुहान से लेकर भंडारण तक उपयोग में लाया जाता है। दूध निकालने से पहले और बाद मे बर्तनों की अच्छी तरह सफाई करने से धूल और कीटाणु हट जाते है, दूध दुहने के पंद्रह मिनट पहले दूध के उपकरणों को सफाई वाले घोल से धो लेना उसके भंडारण अवधि को कम कर देते है। इसलिए पशु के खानपान,

आवास और स्वास्थ्य प्रंबधन पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए, जिससे पशु स्वस्थ रहे और दूध में हानिकारक जीवाणुओं को कम किया जा सके।

स्वच्छ दुहन (हाइजेनिक मिल्किंग)

दूध में सूक्ष्मजीव, मशीन मिल्किंग व हैण्ड मिल्किंग दोनों के द्वारा भी प्रवेश कर सकते है। हाथ से दुहन के दौरान, ग्वाले से होने वाला संदूषण मशीन मिल्किंग की तुलना में अधिक होता है। इसलिए ग्वाले का संक्रमित बीमारियों जैसे तपेदिक से मुक्त होना चाहिए। ग्वाले के नाखून साफ व कटे हुए होने चाहिए तथा साफ कपड़े पहने होना चाहिए और दुहन से पहले हाथों को साबुन से अच्छी तरह धोना चाहिए तथा बाद में साफ एवं सूखे तौलिए से पोंछना चाहिए। नियमित अंतराल पर दुहन करना, थनों से पूरा दूध निकालना और दुहन के दौरान साफ-सफाई सभी महत्वपूर्ण पहलू है, जिनका ध्यान रखा जाना चाहिए। थन को अच्छी तरह साफ करना चाहिए और 30 सेकंड तक मालिश की जानी चाहिए तथा दूध निकालने से पहले थन को सूखे कपड़े से पोंछ लेना चाहिए। शुरूआत में निकाले गए दूध को परीक्षण के लिए एक अलग बर्तन में इकट्ठा करना चाहिए तथा खराब दूध को हटा देना चाहिए। दूध को फर्श में नहीं गिरने देना चाहिए, क्योंकि इससे संक्रमण का खतरा होता है। दूध को जल्दी से जल्दी दूध वाले बर्तन में निकालना चाहिए और दुहन की पूरी प्रक्रिया को 6 से 8 मिनट में पूरा कर लेना चाहिए। ग्वाले को अपने हाथ को पशु के शरीर से नहीं पोंछना चाहिए। दुहन के बाद थन को एंटीसेप्टिक घोल जैसे पोटैशियम परमैंगनेट या आयोडीन घोल मे डुबोया जाना चाहिए। प्रत्येक दुहन के बाद दुहन क्षेत्र (मिल्किंग एरिया) की अच्छे से सफाई की जानी चाहिए। दूध को साफ कपड़े या छलनी से छान लेना चाहिए और कपड़े को धोकर सूखा लेना चाहिए।

भंडारण, वहन व कूलिंग

दूध में जीवाणुओं की वृद्धि को रोकने में दूध भंडारण तापमान की मुख्य भूमिका होती है। शुद्ध दुग्ध उत्पादन का फायदा तब तक नहीं होगा, जब तक दूध के भंडारण तापमाप को उचित नहीं रखा जाएगा। दूध निकालने के बाद जितना शीघ्र ठंडा किया जाएगा, दूध की गुणवत्ता उतनी ही अच्छी रहेगी। दुहन के 2 घंटे के अंदर दूध को ठंडा करने से जीवाणुओं की वृद्धि को रोका जा सकता है। यदि दूध को ठंडा करना सम्भव न हो तो परिरक्षकों जैसे लैक्टोपराक्सिडेज का उपयोग किया जाना चाहिए, जिससे दूध को खराब होने से बचाया जा सके। दूध को साफ ढक्कन लगे बर्तन तथा छायादार जगह में रखना चाहिए, ताकि संदूषण को कम किया जा सके और उसे छायादार जगह में रखना चाहिए। दूध के वहन हेतु साफ कंटेनर का इस्तेमाल किया जाना चाहिए और दूध के वहन का समय कम से कम होना चाहिए। दूध को वहन के समय अधिक झटकों से बचाना चाहिए, क्योंकि दूध की वसा आक्सीजन के सम्पर्क में खराब हो जाती है।

एक आदर्श मशीन मिल्किंग के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए:

- गाय या भैंस के थन को पोंछकर 1-2 मिनट मालिश की जानी चाहिए। सामान्यतः गाय के लिए 30 से 60 सेकण्ड और भैंस के लिए 60-120 सेकण्ड मालिश करना चाहिए।
- स्ट्रिप कप की सहायता से दूध की असामान्यता की जाँच की जानी चाहिए।
- मिल्किंग मशीन के कप को अच्छी तरह लगाना चाहिए।
- मिल्किंग मशीन को अच्छी तरह से जाँच लेना चाहिए।
- निप्पल डिप का इस्तेमाल करना चाहिए।
- दूध की मात्रा को रिकार्ड किया जाना चाहिए।
- मिल्किंग मशीन के उचित क्रियान्वन के लिए मशीन निर्माता के निर्देशों का पालन किया जाना चाहिए।

शुद्ध दुग्ध उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण कदम

शुद्ध दुग्ध उत्पादन के लिए डेरी फार्म की दैनिक गतिविधियाँ जैसे-1.फार्म स्तर पर प्रबंधन, 2. दुग्ध उपकरणों एवं बर्तनों की सफाई, 3. दूध निकालने के उचित तरीके, 4.भंडारण, वहन व कूलिंग की समुचित व्यवस्था आदि अहम भूमिका निभाती है। इसके साथ-साथ शुद्ध दुग्ध उत्पादन के लिए निम्नलिखित सामान्य कदम उठाए जा सकते हैं।

- दूध दुहन प्रक्रिया एक निश्चित समय पर की जानी चाहिए और यदि दुहन के समय को परिवर्तित करने की आवश्यकता हो तो उसे धीरे-धीरे बदलना चाहिए।
- दूध के बर्तनों व उपकरणों को प्रयोग में लाने से पहले और बाद में अच्छी तरह साफ करके सुखा लेना चाहिए। थन को गुनगुने पोटैशियम घोल से साफ करना चाहिए। धोते समय अच्छे से मालिश कर साफ-सूखे तौलिए से पोंछना चाहिए।

- थनैला रोग की पहचान हेतु स्ट्रिप विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए। इस विधि में चारों स्तनों के दूध को काले कपड़े से ढके कप में निकालना चाहिए।
- ग्वाले का संक्रमित रोगों से मुक्त होना अति आवश्यक है, अन्यथा ग्वाले से पशु को तपेदिक जैसी बीमारी होने का खतरा रहता है। ग्वाले के नाखून कटे हुए होने चाहिए। हाथों को अच्छे से साबुन से साफ किया जाना चाहिए। सिर पर टोपी लगाई जानी चाहिए, ताकि बालों को दूध में गिरने से रोका जा सके। दुहन के दौरान ग्वाले को अपने हाथ पानी, दूध, लार या तेल से गीले नही करने चाहिए।
- तुरंत ब्यांत वाले एवं अधिक दूध देने वाले पशुओं का दूध, कम दूध देने वाले पशुओं से पहले निकाला जाना चाहिए। 10 लीटर तक दूध देने वाले पशुओं का दूध दिन में दो बार निकालना चाहिए, जबकि 12 से 15 लीटर तक दूध देने वाले पशुओं में दूध निकालने की आवृत्ति को 3 बार तक बढ़ाया जा सकता है।
- दुहन के लिए दूध निकालने की सबसे उत्तम विधि फुल हैंड को अपनाया जाना चाहिए। दूध निकालते समय अँगूठे को नहीं मोड़ना चाहिए, क्योंकि इससे स्तन में घाव होने का खतरा रहता है। ताजे दूध को मसलिन क्लॉथ से छान लेना चाहिए। दूध को ठंडा करने के लिए दुग्ध कैन के आसपास बर्फ रख सकते हैं और इसे संग्रह केन्द्रों से सहकारी केन्द्रों तक जल्द से जल्द पहुँचाया जाना चाहिए।

सभी खाद्य पदार्थों में से दूध को इकट्ठा करना और उसे स्वच्छ तरीके से वितरित करना सबसे कठिन कार्य है। शुद्ध दूध के लिए पशु और ग्वाला दोनों ही मुख्य भूमिका निभाते हैं। इसलिए उनका साफ-सुथरा होना अति आवश्यक है। पशुओं के स्वास्थ्य के लिए एक प्रभावी स्वास्थ्य सर्विस दी जानी चाहिए। इसके अलावा, पशुओं में समय से टीकाकरण की व्यवस्था की जानी चाहिए और छुआछूत वाली बीमारियों के लिए एक प्रामाणिक पशु चिकित्सक से जाँच करवाई जानी चाहिए। गाँव स्तर पर पूरे समय पशु चिकित्सीय सुविधाएं उपलब्ध कराई जानी चाहिए। दूध को खराब होने से बचाने के लिए दुग्ध संग्रह केन्द्रों को आसानी से पहुँचने योग्य जगह पर स्थापित किया जाना चाहिए। शुद्ध दुग्ध उत्पादन के लिए साफ-सफाई के साथ-साथ किसानों को जानकारी दिए जाने की भी आवश्यकता है। हमारा मुख्य उद्देश्य दुग्ध उत्पादकों को दुग्ध शेड की सफाई, शुद्ध दुग्ध उत्पादन के तरीके, पशु स्वास्थ्य एवं दूध निकालने की सही विधि के बारे में अवगत कराना है। दुग्ध उत्पादन में महिलाओं की भागीदारी भी सुनिश्चित किए जाने की आवश्यकता है, क्योंकि पशुधन प्रबंधन में महिलाओं की मुख्य भूमिका होती है। स्वच्छ दुग्ध उत्पादन व उच्च गुणवत्ता युक्त दुग्ध पदार्थों के उत्पादन को सुनिश्चित कर किसानों की आर्थिक स्थिति को सुधारा जा सकता है। □□

वैज्ञानिक (पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन) एवं
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र मंडला (म.प्र.)

पशुओ में योनिमार्ग, गर्भाशय ग्रीवा या गर्भाशय का बाहर आना

-आशुतोष बसेड़ा, जितेंद्र अग्रवाल एवं अतुल सक्सेना

पशुओं में जननांगों (योनिमार्ग, गर्भाशय ग्रीवा या गर्भाशय) का योनिमार्ग से बाहर आना मुख्य रूप से जुगाली करने वाले पशुओं में देखा जाता है। पशुपालकों को इस समस्या के कारणों से अवगत कराना और इसके उपचार व रोकथाम के लिए संभव प्रयास करना हमारी जिम्मेदारी है। यह देखा गया है कि यह समस्या एक ब्यांत में आने के उपरांत हर ब्यांत में बनी रहती है, क्योकि यह माना जाता है कि यह आनुवांशिक कारणों से होती है, जिससे कि यह लक्षण आगे की पीढ़ियों में भी बने रहते हैं। हमें रोकथाम के तरीकों के बारे में किसान को ज्यादा जानकारी देनी चाहिए। इससे की आने वाले ब्यांतों में पशु की प्रजनन क्षमता बनी रहे और इस समस्या को आने वाले ब्यांत में कम किया जा सके।

पशुओं में जननांगों के बाहर आने की समस्या मुख्य रूप से प्रसव से पहले या प्रसव के बाद होती है। पशुओं में जननांगों के बाहर आने को दो तरह से बांटा गया है।

पहला योनिमार्ग, गर्भाशय ग्रीवा और दूसरा गर्भाशय का बाहर आ जाना। योनिमार्ग, गर्भाशय ग्रीवा के बाहर आने की समस्या प्रमुख रूप से प्रसव से पहले अंतिम तीन महीनों में होने की संभावना रहती है, जबकि सम्पूर्ण गर्भाशय के बाहर आने की समस्या प्रसव के बाद होती है।

पशुओं में जननांगों (योनिमार्ग, गर्भाशय ग्रीवा या गर्भाशय) का योनिमार्ग से बाहर आना मुख्य रूप से जुगाली करने वाले पशुओं में देखा जाता है। पशुपालकों को इस समस्या के कारणों से अवगत कराना और इसके उपचार व रोकथाम के लिए संभव प्रयास करना हमारी जिम्मेदारी है।

यह देखा गया है कि यह समस्या एक ब्यांत में आने के उपरांत हर ब्यांत में बनी रहती है, क्योकि यह माना जाता है कि यह आनुवांशिक कारणों से होती है, जिससे कि यह लक्षण आगे की पीढ़ियों में भी बने रहते हैं। हमें रोकथाम के तरीकों के बारे में किसान को ज्यादा जानकारी देनी चाहिए। इससे की आने वाले ब्यांतों में पशु की प्रजनन क्षमता बनी रहे और इस समस्या को आने वाले ब्यांत में कम किया जा सके।

योनिमार्ग से योनि, गर्भाशय ग्रीवा का बाहर आना

यह मुख्य रूप से गर्भावधि के अंतिम तीन महीनों में ज्यादा देखा गया है। यह समस्या ज्यादा बार बच्चे दे चुके पशु में ज्यादा होने की संभावना रहती है।

अंतिम तीन महीनों में गर्भाशय का भार बढ़ने के कारण गर्भाशय में दबाव ज्यादा रहता है, जिसके कारण अगर कुल्हे के बंधन कमजोर हैं, तो योनिमार्ग से योनि, गर्भाशय ग्रीवा बाहर आ जाती है।

योनिमार्ग से योनि, गर्भाशय ग्रीवा का बाहर आने को चार प्रकार से बाँटा गया है। इसमें पहले प्रकार में योनि योनिमार्ग से बाहर तब आती है, जब पशु बैठा होता है। इसे लोकल भाषा मे फूल का बाहर आ जाना भी कहते है।

पशु के खड़े हो जाने पर योनि वापिस अपनी स्थिति में चली जाती है। इस स्थिति पर पशुपालक को कुछ सावधानियां रखना शुरू कर देनी चाहिए। जैसे कि पशु के बैठने वाले स्थान पर पशु के पिछले वाले भाग को थोड़ा ऊपर उठा कर रखना चाहिए। इससे पशु के पिछले हिस्से पर ज्यादा जोर न लगे। पशु के आस पास सफाई का भरपूर ध्यान रखना चाहिए और पशु को कैल्शियम उचित मात्रा में खिलाना चाहिए।

दूसरे प्रकार में योनि बैठे और खड़े पशु दोनों ही समय पर बाहर रहती है पर गर्भाशय ग्रीवा बाहर नहीं दिखती है। इस स्थिति में योनि के बहुत समय तक बाहर रहने से वातावरण मे मौजूद जीवाणु और विषाणु इसे संक्रमित कर सकते हैं।

तीसरे प्रकार में योनि के साथ साथ गर्भाशय ग्रीवा भी योनि मार्ग से बाहर दिखती है। इस स्थिति में पेशाबदानी में दबाव के कारण पशु का पेशाब आना भी बंद हो जाता है और पेशाब के रुक जाने के कारण फूल का आकार भी बड़ा हो जाता है।

चौथे प्रकार में योनि, गर्भाशय ग्रीवा योनिमार्ग से बाहर तो रहती है ही साथ में योनि, गर्भाशय ग्रीवा मे बार-बार पशु के उठने बैठने से और आस पास मौजूद धारदार चीजों, गोबर, धूल मे पड़े सूक्ष्मजीव के कारण योनि और गर्भाशय ग्रीवा का कटना और फटना, गलना और संक्रमण हो जाता है। जो बच्चे की जान और पशु की प्रजनन क्षमता दोनों के लिए ही नुकसानदेय है।

पशुपालक के लिए यह सुझाव है कि जैसे ही आपको लगे की गर्भाशय से योनि बाहर दिख रही है, तो तुरंत पशुचिकित्सक की सलाह लें।

योनि के योनिमार्ग से बाहर आने की समस्या यदि गर्भावस्था में एक बार आती है, तो ये देखा गया है कि यह समस्या बार बार हर ब्यांत में आने की संभावना बनी रहती है। यह समस्या पशु की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में भी जाती है (यानि कि अगर माँ में गर्भाशय के अंतिम महीनों मे फूल बाहर आ रहा है, तो उसकी बछिया जब गर्भधारण करेगी, तो उसमें भी यह समस्या होने की संभावना रहेगी)।

इसके अलावा, योनि के बाहर आने के कारणों में कुछ संक्रमण के कारण, योनिमार्ग, पेशाबमार्ग या गुदाद्वार में किसी तरह की जलन के कारण भी योनि बाहर आ जाती है। इसीलिए बीमारी के उपचार से पहले निदान जानने की जरूरत है।

बूढ़े पशुओं में यह समस्या ज्यादा देखने को मिलती है। जो पशु तिपतिया घास ज्यादा खाते हैं, उनमें भी यह संमस्या ज्यादा होती है। क्योंकि इस घास में फायटोएस्ट्रोजन होते हैं, जिसके कारण कूल्हे के बंधन कमजोर हो जाते हैं। इससे योनिमार्ग के बाहर आने का खतरा बढ़ जाता है।

पशु को गर्भाशय के अंतिम महीनों में जरूरत से ज्यादा चारा देने से भी यह समस्या बन सकती है। योनिमार्ग से योनि, गर्भाशय ग्रीवा का बाहर आना ज्यादा देखा जाता है, जबकि गर्भाशय का बाहर आना बच्चे देने के तुरंत बाद देखा जाता है।

गर्भाशय का बाहर आना

गर्भाशय का बाहर आना बच्चे देने के तुरंत बाद या बच्चा

देने के कुछ घंटों बाद देखा जाता है। योनि या गर्भाशय ग्रीवा के बाहर आने के बाद गर्भाशय योनिमार्ग से बाहर लटका रहता है। यह गर्भाशय गहरे लाल रंग का होता है, जिसमें बटन की आकृति के करंकल्स होते है। यह एक आपात चिकित्सा की स्थिति है। ऐसा होने पर पशुपालकों के लिए सुझाव है कि बिना देर किए हुए पशुचिकित्सक से संपर्क करे। यह एक जानलेवा समस्या है।

देरी की स्थिति में पशु की जान भी जा सकती है। पशुपालक को यह समझने की जरूरत है कि अगर गर्भाशय को बिना तरीका जाने अंदर करने की कोशिश की गयी, तो इससे स्थिति सुधरने के बजाय और बिगड़ सकती है। इसलिए पशुपालक को सुझाव है कि ऐसी स्थिति में एक साफ कपड़े से गर्भाशय का आवरण कर ले और जल्द से जल्द पशुचिकित्सक को इसकी जानकारी दें।

गर्भाशय के बाहर आ जाने के कारण

कैल्शियम की कमी, ज्यादा मात्रा में एस्ट्रोजन हार्मोन का निकलना, जिससे कि कूल्हे के बंधनों का कमजोर हो जाना, ज्यादा मात्रा में सूखा खाना, योनि मार्ग, पेशाब मार्ग या गुदाद्वार में किसी तरह की जलन या संक्रमण के कारण, आनुवांशिक कारणों से, प्रसव के समय माँ द्वारा ज्यादा जोर लगाने पर, फंसे हुए बच्चे को ज्यादा बलपूर्वक खीचने पर, पशु को एक ही जगह पर बंधे रहने पर, पशु को नियमित रूप से व्यायाम न कराने पर योनि, गर्भाशय ग्रीवा, गर्भाशय के बाहर आने का खतरा बना रहता है।

उपचार

सबसे पहले योनिमार्ग से बाहर निकले हुए भाग को ठंडे साफ पानी में पॉटेशयम परमेगनेट(1:1000) मिलाकर साफ कर लेना चाहिए। फिर बाहर निकले हुए भाग को थोड़ा ऊपर उठाना चाहिए, जिससे पेशाबदानी से पेशाब बाहर निकल जाए। जरूरत पड़ने पर पेशाबदानी में नली लगाकर भी पेशाब बाहर निकाला जा सकता है।

पेशाब बाहर निकालने से योनिमार्ग से बाहर निकले हुए भाग को वापस पुरानी जगह पर पहुंचाने में आसानी होती है। यदि पशु ज्यादा जोर लगा रहा हो तो पशु को पिछला हिस्सा सुन्न करने का इंजेक्शन देना चाहिए, ताकि पशु जोर न लगाए। इससे भी बाहर निकले हुए भाग को योनिमार्ग के अंदर पहुंचाने मे आसानी होगी।

इसके बाद बाहर निकले हुए भाग पर एंटिसफ्टिक पावडर, लीगनोकेन जेल्ली और प्रोलेप्स इन का पाउडर या स्प्रे लगाकर पाँच मिनट तक छोड़ देना चाहिए। फिर जब बाहर निकला हुए भाग के वजन में कमी आ जाए, तो जो भाग योनिमार्ग के नजदीक है उस भाग से योनिमार्ग को धीरे-धीरे अंदर उसके स्थान पर पहुचा देना चाहिए।

इसके बाद योनिमार्ग के दुबारा बाहर न निकलने के लिए रस्सी की बेड़ी या योनिमार्ग के ऊपर वाले भाग को फीते की सहायता से बंद कर देना चाहिए, पर इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि योनिमार्ग के नीचे वाले भाग में चार अंगुली की जगह हो, ताकि पशु को पेशाब करने मे कोई परेशानी न हो। साथ में पशु को कैल्शियम भी देना चाहिए और संक्रमण और सूजन को कम करने के लिए सहायक उपचार देना चाहिए।

पशुपालकों के लिए सुझाव

पशुपालकों को पशु के रहने वाले स्थान पर साफ सफाई का ख्याल रखना चाहिए। इन पशुओं में अपने पहले ब्यांत में योनि मार्ग या गर्भाशय के बाहर आने की समस्या थी। उनके बैठने वाले स्थान को ऐसा बनाना चाहिए कि पिछला हिस्सा थोड़ा उठा रहे, ताकि पिछले वाले हिस्से मे ज्यादा जोर न पड़े।

पशुओं को कैल्शियम की उचित मात्रा नियमित रूप से देनी चाहिए। पशुओं को नियमित रूप से व्यायाम कराना चाहिए। जिन पशुओं में यह समस्या आनुवांशिक कारणों से हो उनको गाभिन नहीं कराना चाहिए। यदि पशुओं में यह समस्या आ गयी है, तो पशुचिकित्सक से संपर्क करे और उनके निर्देशानुसार काम करे। □□

मादा पशु प्रजनन रोग विभाग दुवासू,
पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, मथुरा

ब्यांत के बाद दूध उत्पादन में कमी
कारण अनेक, समाधान एक

AYURVET™

पशुचिकित्सकों द्वारा
अपनाया गया वैज्ञानिक
रूप से जांचा परखा
भरोसेमंद हर्बल उपाय

रैस्टोबल

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये, तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए

500 मि.ली. 1 लीटर

पशुओं की बेहतर रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए शक्तिशाली समाधान

गिलोय (टीनोस्पोरा कार्डीफोलिया)

-रंजन कुमार राकेश

गिलोय एक बहुवर्षीय लता होती है। इसके पत्ते 5-15 से.मी, हृदय के आकार के होते हैं। यह भारत के सभी स्थानों पर 1200 मीटर की ऊँचाई तक सर्वत्र सुलभ है। इसके तने पर भूरे रंग की पतली छाल होती है तथा समय में वृद्धि के साथ यह छाल फटने लगती है। तना हरा व कोमल होता है, परन्तु आयु वृद्धि के साथ इस तने में गहरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। फूल ग्रीष्म ऋतु में छोटे-छोटे पीले रंग के गुच्छों में आते हैं। फल भी गुच्छों में ही लगते हैं तथा छोटे मटर के आकार के होते हैं। पकने पर ये रक्त के समान लाल हो जाते हैं। बीज सफेद, चिकने, कुछ टेढ़े मिर्च के दानों के समान होते हैं।

सामान्य वर्णन

गिलोय एक बहुवर्षीय लता होती है। इसके पत्ते 10-15 से.मी, हृदय के आकार के होते हैं। यह भारत के सभी स्थानों पर 1200 मीटर की ऊँचाई तक सर्वत्र सुलभ है। इसके तने पर भूरे रंग की पतली छाल होती है तथा समय में वृद्धि के साथ यह छाल फटने लगती है। तना हरा व कोमल होता है, परन्तु आयु वृद्धि के साथ इस तने में गहरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। फूल ग्रीष्म ऋतु में छोटे-छोटे पीले रंग के गुच्छों में आते हैं। फल भी गुच्छों में ही लगते हैं तथा छोटे मटर के आकार के होते हैं। पकने पर ये रक्त के समान लाल हो जाते हैं। बीज सफेद, चिकने, कुछ टेढ़े, मिर्च के दानों के समान होते हैं।

आयुर्वेद में इसको कई नामों से जाना जाता है यथा अमृता, गुडुची, छिन्नरुहा, चक्रांगी, आदि। बहुवर्षायु तथा अमृत के समान गुणकारी होने से इसका नाम अमृता है। आयुर्वेद साहित्य में इसे ज्वर की महान औषधि माना गया है एवं जीवन्तिका नाम दिया गया है। गिलोय की लता जंगलों, खेतों की मेड़ों, पहाड़ों की चट्टानों आदि स्थानों पर सामान्यतः कुण्डलाकार चढ़ती पाई जाती है। नीम, आम्र के वृक्ष के आस-पास भी यह मिलती है। जिस वृक्ष को यह अपना आधार बनाती है, उसके गुण भी इसमें समाहित रहते हैं। इस दृष्टि से नीम पर चढ़ी गिलोय श्रेष्ठ औषधि मानी जाती है। इसका काण्ड छोटी अंगुली से लेकर अंगूठे जितना मोटा होता है। बहुत पुरानी गिलोय में यह बाहु जैसा मोटा भी हो सकता है। इसमें से स्थान-स्थान पर जड़ें निकलकर नीचे की ओर झूलती रहती हैं। चट्टानों अथवा खेतों की मेड़ों पर जड़ें जमीन में घुसकर अन्य लताओं को जन्म देती हैं। कन्द गुडूची व एक असामी प्रजाति इसकी अन्य जातियों की औषधियाँ हैं, जिनके गुण अलग-अलग होते हैं।

भौगोलिक विवरण

यह भारत के सभी स्थानों पर 1200 मीटर की ऊँचाई तक सर्वत्र सुलभ है।

जलवायु एवं मिट्टी

यह सभी प्रकार की जलवायु में हो जाता है, लेकिन यह गर्म

और नमीयुक्त जलवायु में अधिक वृद्धि करता है। बलुई दोमट मिट्टी इसके लिए बहुत उपयुक्त होती हैं।

उपयोगी भाग

तना, जड़, संपूर्ण पौध।

कैसे करें खेती

गिलोय या रोपण बीज और कटिंग दोनों से किया जा सकता है। बीजों की अंकुरण क्षमता कम होने से इसे ज्यादातर कटिंग के माध्यम से ही रोपा जाता है। कटिंग से इसके रोपण के लिए 6-9 इंच लम्बी कटिंग जिससे अधिक नोड्स हो ली जाती है। इस कटिंग्स को उठे हुए बेड्स अथवा पोलीथीन की थैली में जिसमें मृदा, रेत व खाद का संतुलित मिश्रण हो लगा दिया जाता है तथा लगभग 25-30 दिनों में पौधा खेत में लगाने हेतु तैयार हो जाता है।

जमीन की तैयारी

जमीन की अच्छी जुताई और खरपतवार से मुक्त किया जाना चाहिए। मिट्टी तैयार करते समय प्रति एकड़ 4 टन उर्वरक और नाइट्रोजन की आधी खुराक (30 किलो) प्रयोग की जाती है। बोने से पूर्व खेत में 2 से 3 बार हल चलाया जाकर उस पर पाटा चलाया जाता है, जिससे जमीन एक जैसी तथा भली प्रकार समतल हो जावे। सामान्यतया वर्षा के प्रारम्भ (जून-जुलाई) में ही इस पौध का रोपण किया जाना चाहिये। इसके लिए 30x30x30 से.मी. का गड्ढा खोदकर इसमें जड़युक्त कटिंग को लगाना चाहिये। पौधे से पौधे के दूरी 1x1 मीटर रखनी चाहिये। एक एकड़ के लिए लगभग 1000 पौधों की आवश्यकता होती है।

सिंचाई विधि

प्रारम्भ में पौधे को रोज पानी देना आवश्यक है। अत्यधिक शीत व गर्म मौसम के दौरान आकस्मिक सिंचाई लाभकारी रहेगी।

रोग और कीट नियंत्रण

किसी गंभीर कीट संक्रमण और बीमारी की जानकारी नहीं है।

फसल की कटाई

तने की कटाई पतझड़ के समय की जाती है जब यह 2.5 सेमी. से अधिक व्यास का हो जाता है. आधार का हिस्सा फिर से बढ़ने के लिए छोड़ दिया जाता है.

कटाई पश्चात प्रबंधन

तने को सावधानीपूर्वक छोटे टुकड़ों में कांटे और छाया में सुखाएं। इसे जूट के बोरें में रखकर ठंडे और हवादार भंडार गोदाम में रखा जा सकता है।

पैदावार

पौधे से करीब दो वर्षो के बाद प्रति एकड़ करीब 3000 से 4000 किलो ताजा तने की उपज होती है, जिसका शुष्क भार 500-600 किलो रह जाता है।

औषधीय उपयोग

गिलोय के फल, पत्ते तथा जड़ों को औषधीय उपयोग में लिया जाता है, परन्तु इसका तना इन सबसे महत्वपूर्ण होता है।

इसके आमयिक प्रयोगों में निम्नानुसार उपयोग हैं-

यह रोग प्रतिरोध क्षमता को बढ़ाने में उत्तम है। यह वृद्धावस्था को रोकती है। हृदय वृक्क एवं यकृत को ताकत देती है। वात ज्वार में गुडूची श्रतशीत कषाय काम लिया जाताहै। विषम ज्वार में गुडूची स्वपरस काम लिया जाता है। कामला में गुडूची स्वरस का प्रयोग होता है। वातरक्त में गुडूची का प्रयोग होता है। प्रमेह में गुडूची का प्रयोग लाभकर है। इसी प्रकार कुष्ठ, कण्डूत, प्लीपहोदर, अर्श, जीर्णज्वर, हलीमक आदि कतिपय रोगों में गुडूची के एक मूलिका का प्रयोग का विधान है। गिलोईन, गिलाइनीन, गिलेस्टोराल आदि मुख्य कारक तत्व पाये जाते हैं। इसकी पत्तियों में सबसे ज्यादा मात्रा में प्रोटीन होता है।

□□

गाय तथा भैंस में हीट की जांच की विधियां

-डॉ. ब्रह्मानन्द, डॉ. नेहा गुप्ता एव डॉ. राजेश कुमार

जब मादा पशु नर पशु को पाने को आतुर रहती है तथा हीटिंग के लिए तैयार खड़ी रहती है, तो इस अवस्था को हीट कहा जाता है। किसी पशुपालक डेरी व्यवसाय के लाभ के लिए पशु का ब्यांत के बाद जल्दी हीट में आना आवश्यक होता है। क्योंकि अगर समय पर गाय व भैंस हीट में आती है, तो उसका हाई पीरियड छोटा होगा तथा पशुपालक को कम आर्थिक नुकसान होगा।

जब मादा पशु नर पशु को पाने को आतुर रहती है तथा हीटिंग के लिए तैयार खड़ी रहती है, तो इस अवस्था को हीट कहा जाता है।

किसी पशुपालक डेरी व्यवसाय के लाभ के लिए पशु का ब्यांत के बाद जल्दी हीट में आना आवश्यक होता है। क्योंकि अगर समय पर गाय व भैंस हीट में आती है, तो उसका हाई पीरियड छोटा होगा तथा पशुपालक को कम आर्थिक नुकसान होगा।

जॉच की विधियां

1 पशु के व्यवहार को देखकर पता लगाना

जब पशु हीट में आता है, तो उसके व्यवहार में भी परिवर्तन होता है, जो निम्नलिखित हैः-

- पशु का बार बार रंभाना।
- पशु बैचैनी महसूस करता है।
- चारा कम खाता है।
- दूध कम देता है।
- बार बार पेशाब करता है।
- दूसरे पशुओं पर चढ़ता है।
- पशु की योनि से पानी जैसा स्त्राव होता है, जो पतली रस्सी के समान लटका रहता है।
- जब पशु की कमर को दबाते हैं, तो उसकी पूँछ को ऊपर उठाकर योनि से अलग कर लेता है।

ध्यान देने योग्य बातें

- जब पशु दूसरे पशु पर चढ़ता है, तब उसका कृत्रिम गर्भाधान नही करना चाहिए, क्योंकि ये हीट के आरम्भिक लक्षण होते हैं।
- जिस पशु में हीट के लक्षण नजर आयें तथा वह दूसरे पशु को अपने ऊपर चढ़ने दे रहा हो तो उसे स्टंडिग हीट कहते हैं, जो गर्भाधान का उचित समय होता है।

2 पशु के गुदा द्वार में हाथ डालकर पता लगाना

- यह कार्य एक पशुचिकित्सक द्वारा किया जाता है। इस विधि में पशुचिकित्सक पशु के जननांगों को छूकर इनका सटीक विश्लेषण करता है।
- सर्वप्रथम सर्विक्स को पालपेट करते हैं। हीट में आए हुए पशु की सर्विक्स में ढीलापन होता है तथा हम अपने हाथ का अंगूठा इसके ओस में डाल सकते है अर्थात् ओस खुला रहता है।
- जब पशु हीट में नही होता है, तो गर्भाशय नरम, चिकना, लचीला तथा नार्मल टोन होती है। हीट के दौरान ब्लड सप्लाई बढ़ने तथा इस्ट्रोजन हार्मोन के असर के कारण गर्भाशय की टोन बढ़ जाती है। इस दौरान यूटेराइन हॉर्न

पालपेट करने पर थोडा कड़क महसूस होता है।

- हीट के दौरान ओवरी की साइज बढ़ जाती है तथा ग्राफियन कॉलिक्ल भी बड़ा होता है।

3 वेजाइना के परीक्षण द्वारा

- वल्वा में ढीलापन आ जाता है तथा सूजन रहती है।
- वेजाइना की म्यूकस मेम्ब्रेन में ब्लड सप्लाई बढ़ जाती है, जिससे गुलाबी रंग अधिक गहरा दिखाई देता है।
- वेजाइना की गोबलेट कोशिकाओं में म्यूकस की मात्रा बढ़ जाती है।

4 टीजर बुल के द्वारा

- कई बार पशु हीट के व्यावहारिक लक्षण प्रकट नही करते हैं तब टीजर बुल हीट के लक्षणों को पहचानने में सहायक होते है।
- जब फार्म पर अधिक पशु होते हैं, तब हीट को पहचानना मुश्किल होता है, इस अवस्था में टीजर बुल सहायक होते हैं।
- टीजर बुल को सुबह तथा शाम को पशुओं के बीच परेड करवानी चाहिए।

5 प्रशिक्षित कुत्ते द्वारा

- जब पशु हीट में आता है, तो वह कुछ फेरोमोन्स छोड़ता है, जिन्हें सैक्स फेरोमोन्स कहा जाता है। ये फेरोमोन्स बाहरी जननांगों तथा मूत्र में उपस्थित होते है। एक प्रशिक्षित कुत्ता इन फेरोमोन्स की सहायता से पशु के हीट में होने अथवा नही होने के बारे में सूचित करता है।

6 प्रयोगशाला की सहायता से

- प्रयोगशाला में हीट का पता करने के लिए काफी मंहगे उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है तथा इसमें काफी समय की बर्बादी होती है और सटीक परिणामों की भी गारंटी नही होती है। यह विधि केवल प्रायोगिक कार्यों के लिए ही उपयुक्त है न कि फील्ड लेवल पर।

बछड़े को ब्याने के बाद गाय कितनी जल्दी हीट में आ सकती है?

हीट चक्र और प्रजनन पोषण ऊर्जा का एक बड़ा हिस्सा हैं। गाय हीट से शांत होने के बाद, गायों को चक्र फिर से शुरू करने में 60 से 90 दिन लगते हैं। इस अवधि को प्रसवोत्तर संवेदनाहारी कहा जाता है। पहले बछड़े के हेफर्स में, सामान्य रूप से पहले बछड़े के हेफर्स के लिए चक्र को फिर से शुरू करने में 90 से 120 दिन लगते हैं और परिपक्व गायों की तुलना में अधिक समय तक रहता है। पोषक तत्वों के सबसे महत्वपूर्ण उपयोग को शांत करने के तुरंत बाद बछड़े के लिए दूध बनाना है, इसलिए प्रजनन प्रणाली को बंद करना समझ में आता है। दूसरी बात, क्योंकि गर्भधारण करने वाले मवेशियों में 9 महीने का गर्भ ठहर जाता है, ''बहुत जल्द'' जिसके परिणामस्वरूप बछड़ों को हर साल पहले जन्म लिया जाता है।

किस उम्र में गाय हीट में आती हैं ?

आमतौर पर प्रजनन से पहले कम से कम 15 महीने की उम्र तक इंतजार करना सबसे अच्छा होता है। भले ही शुरुआती परिपक्व नस्लें 7 से 9 महीने की उम्र तक यौवन तक पहुंचती हैं, लेकिन जब तक आप उन्हें प्रजनन नहीं करवा सकते हैं, तब तक इंतजार करना सबसे अच्छा है।

कैसे लाये अपनी गाय या भैंस को हीट में ?

वजन एक महत्वपूर्ण समस्या हैं। पशु का हीट में नहीं आने का। गाय के लिए 2.5 क्विन्टल वजन होना जरुरी है, ये वजन होने में 12 महीने लगते हैं। हीट में नहीं आने के कारणों में प्रमुख रूप से मिनरल्स, विटामिन की कमी भी हो सकती हैं।

डॉ. ब्रह्मानन्द एव डॉ. नेहा गुप्ता
अपोलो कॉलेज आफ वेटेरिनरी मेडिसिन, जयपुर
एवं डॉ. राजेश कुमार, स्नातकोतर पशु चिकित्सा शिक्षा
एवं अनुसंधान संस्थान, पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर

□□

एक्सापार

AYURVET™

प्रसव पश्चात् गर्भाशय की सफाई एवं पुनः गाभिन बनाने हेतु

ब्याने के बाद की समस्याओं का अत्यंत प्रभावकारी उपाय

- गर्भाशय के संक्रमण से बचाए एवं संपूर्ण सफाई करे
- गर्भाशय के संकुचन द्वारा जेर गिराने में सहायक
- गर्भाशय को समयानुसार पुनः स्थापित करे

- रीपिट ब्रीडिंग एवं बांझपन की समस्या से बचाए
- ब्याने के बाद समयानुसार अगले गर्भधारण के लिए तैयार करे

1 लीटर बोतल

500 मि.ली. पैट बोतल

4 बोलस की एक स्ट्रिप

आयुर्वेट पशु स्वास्थ्य संसार

खोज खबर

आंध्र प्रदेश सरकार की डेरी क्षेत्र के विकास के लिए अमूल के साथ समझौते की योजना

आंध्र प्रदेश सरकार की राज्य में डेरी क्षेत्र के विकास के लिए गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ लिमिटेड (जीसीएमएमएफ) के साथ समझौता करने की योजना है। जीसीएमएमएफ अमूल ब्रांड की मालिक है। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी की अध्यक्षता में एक समीक्षा बैठक में इस मुद्दे पर विस्तार से चर्चा की गयी। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से अमूल के साथ सहमति ज्ञापन पत्र (एमओयू) के लिए दिशानिर्देश तैयार करने को कहा है। इस एमओयू पर 15 जुलाई को हस्ताक्षर किए जाने हैं। प्रस्तावित समझौते के अनुसार अमूल डेरी किसानों को बेहतर दाम दिलाने में मदद करेगा। साथ में नयी प्रौद्योगिकी और विपणन सुविधाओं को लाने में मदद करेगा। वर्तमान में अमूल गुजरात, दिल्ली-एनसीआर और उत्तर प्रदेश में मुख्य तौर पर प्रतिदिन 140 लाख लीटर दूध बेचती है। उसके अन्य डेरी उत्पादों की बिक्री देशभर में होती है।

डेरी सेक्टर के लिए घातक सिद्ध होगी सस्ते दरों पर एसएमपी आयात का फैसला

सरकार डेरी सेक्टर की मजबूती के लिए कई कदम तो उठा रही है, लेकिन उसके एक ताजा फैसले ने कोरोना महामारी के दौरान नुकसान झेल रहे डेरी किसानों और डेरी इंडस्ट्री का गुस्सा और बढ़ा दिया है। भारत सरकार ने 23 जून को अधिसूचना जारी कर टैरिफ रेट कोटा के तहत 15 फीसदी सीमा शुल्क की रियायती दर पर 10,000 टन स्किम्ड मिल्क पाउडर के इंपोर्ट की अनुमति दी है। आपको बता दें कि देश में मिल्क पाउडर पर सीमा शुल्क की मौजूदा दर 50 प्रतिशत है। डेरी एक्सपर्ट्स के मुताबिक सरकार के इस फैसले से डेरी उद्योग और डेरी किसानों

को जबरदस्त झटका लगेगा। क्योंकि इस फैसले से जहां देश में स्किम्ड मिल्क पाउडर के दाम 80 रुपये प्रति किलो तक गिर सकते हैं, वहीं दूध के दामों में 7 से 8 रुपये प्रति लीटर की कमी आ सकती है।

गाय की एंटीबॉडी से होगा कोरोना का खात्मा

अमेरिका में स्थित साउथ डकोटा के गायों का अध्ययन किया जा रहा है कि वो किस तरह कोरोना के खिलाफ दवा या वैक्सीन बनाने में मददगार हो सकती हैं। एक बायोटेक कम्पनी ने कुछ जेनेटिकली मॉडिफाइड गायों द्वारा ऐसे एंटीबॉडी का उत्पादन किए जाने की बात कही है, जो SARS-CoV-2 का तगड़ा प्रतिरोधक हो सकता है। यही

वो रोगजनक है, जो कोरोना वायरस संक्रमण का कारण है। कम्पनी ने योजना बनाई है कि कुछ ही दिनों में इसका क्लिनिकल उपयोग शुरू किया जाएगा। अंतरराष्ट्रीय 'साइंस' मैगजीन के अनुसार, SAb Biotherapeutics ने दावा किया है कि गाय के शरीर में बनी हुई एंटीबॉडी से कोरोना संक्रमितों का इलाज संभव है। कोरोना के इलाज के लिए एंटी प्लाज्मा थेरेपी जैसे इलाजों का सहारा लिया जा रहा है। गाय की एंटीबॉडी से कोरोना के इलाज पर रिसर्च की खबर ने एक उम्मीद पैदा की है। हालाँकि, इस प्रक्रिया के लिए गाय के शरीर में कुछ आनुवांशिक बदलाव किया जाता है। एंटीबॉडी तैयार होने में करीब एक महीने का समय लग जाता है। कम्पनी ने कहा है कि एक गाय द्वारा दिए गए एंटीबॉडी से सैकड़ों कोरोना के मरीजों का इलाज संभव है।

देश में डेढ़ करोड़ डेरी किसानों को मिलेगा तीन लाख रूपए का बिना गारंटी लोन

देश में डेढ़ करोड़ डेरी किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड की सुविधा दी जा रही है। इतना ही नहीं इस क्रेडिट कार्ड के जरिए डेरी किसानों को बिना गारंटी के 3 लाख रुपये तक का लोन भी मिलेगा। केन्द्र सरकार ने इसके लिए एक विशेष अभियान 1 जून को शुरू किया है। इसके तहत अगले दो महीनों यानी 31

जुलाई, 2020 तक दुग्ध संघों और दुग्ध उत्पादक कम्पनियों से जुड़े 1.5 करोड़ डेरी किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड उपलब्ध कराए जाएंगे। पशुपालन एवं डेरी विभाग ने इस अभियान को मिशन के रूप में लागू करने के लिए वित्तीय सेवा विभाग के साथ मिलकर सभी राज्य दुग्ध महासंघ और दुग्ध संघों को पहले ही उपयुक्त परिपत्र और केसीसी आवेदन प्रारूप जारी कर दिए हैं।

जी आर चींताला बने नाबार्ड के नए चेयरमैन

केंद्र सरकार ने जी आर चिंताला को नाबार्ड का नया चेयरमैन नियुक्त किया है। उन्होंने अपना कार्यभार भी संभाल लिया है। नाबार्ड के अध्यक्ष का पद संभालने से पूर्व श्री चिंतला बेंगलुरु स्थित नैबफिन्स के प्रबंध संचालक के पद पर आसीन थे। श्री चिंतला भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली से स्नातकोत्तर हैं। श्री चिंतला

ऐग्री बिजनेस फाइनेंस लिमिटड हैदराबाद के दो वर्षों तक उपाध्यक्ष और बैंकर ग्रामीण विकास संस्थान (बर्ड), लखनऊ के निदेशक भी रहे।

बीएचयू ने माइक्रो इन कैप्सूल से बढ़ाई दूध की शक्ति फोर्टिफाइड मिल्क बनाया

बीएचयू में अब दूध की ताकत बढ़ाने का प्रयोग किया गया है। बच्चों के मानसिक एवं शारीरिक विकास को ध्यान में रखते हुए माइक्रो इन कैप्सूल के माध्यम ओमगा-3 फैटीएसिड (फोर्टिफाइड) दूध तैयार किया गया है। माइक्रो इन कैप्सूल के माध्यम से दूध में मिला ओमेगा-3 पेट में जाने के बाद कैप्सूल से बाहर निकलता है। इसलिए दूध के रंग, गंध व स्वाद में कोई अंतर नहीं होता है। यह कैप्सूल इतना छोटा होता है कि आंखों से दिखता भी नहीं है। बच्चा जब इस दूध को पीएगा तब इस कैप्सूल में बंद ओमेगा-3 फैटीएसिड पेट में मौजूद पाचन रस के सम्पर्क में आएगा। रेडी टू सर्व इस दूध में विटामिन ए और डी भी है। दुग्ध विज्ञान एवं खाद्य प्रौद्योगिकी विभाग के प्रमुख प्रो. डीसी राय ने बताया कि दूध अपने आप में एक संतुलित आहार है। पर इसे और बेहतर बनाने की दिशा में काम किया गया है। काफी अध्ययन के बाद ओमेगा-3 फैटीएसिड मिला दूध तैयार करने में शोधार्थी सफल हुए हैं। उन्होंने बताया कि इस दूध में मिलाया गया ओमेगा-3 अलसी से प्राप्त किया गया है। ओमेगा-3 फैटीएसिड मछली में भी पाया जाता है, लेकिन दूध में मिलाने के लिए अलसी से प्राप्त ओमेगा-3 का उपयोग किया गया है। जैव प्रौद्योगिकी विभाग ने भी दूध के इस्तेमाल की अनुमति दे दी है। यह दूध बच्चों, नौजवानों और वृद्धों के लिए भी फायदेमंद साबित होगा।

मंत्रिमडल ने 15000 करोड़ रूपये की पशुपालन अवसंरचना विकास निधि को मंजूरी दी

केंद्रीय मंत्रिमडल ने आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत पशुपालन को प्रोत्साहन देने के मकसद से 15000 करोड़ रुपये की पशुपालन अवसंरचना विकास निधि (एएचआईडीएफ) बनाने को मंजूरी दे दी। मंत्रिमंडल के फैसले की जानकारी देते हुए केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेरी मंत्री श्री गिरिराज सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री ने जब 20 लाख करोड़ रुपये के पैकेज (आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत घोषित पैकेज) की घोषणा की थी, तब मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेरी को 53000 करोड़ रुपये की राशि दी गई थी। उन्होंने कहा कि यह इन्फ्रास्ट्रक्चर बनाने का फंड है। उद्यमी को तीन फीसदी इंटेरेस्ट सब्वेंशन (ब्याज छूट) दी जाएगी और उद्यमी को इस स्कीम के तहत बुनियादी विकास पर सिर्फ 10 फीसदी खर्च खुद करना होगा, बाकी 90 फीसदी उनको बैंक से कर्ज मिल जाएगा। सरकार आकांक्षी जिलों के पात्र लाभार्थियों को चार फीसदी इंटेरेस्ट सब्वेंशन देगी, जबकि अन्य जिलों के लाभार्थियों को तीन फीसदी। स्कीम के तहत कर्ज का भुगतान करने के लिए दो साल तक की छूट होगी, जबकि कर्ज की भुगतान की अवधि उसके बाद छः साल तक होगी। सरकार नाबार्ड के प्रबंधन में 750 करोड़ रुपये का क्रेडिट गारंटी फंड भी बनाएगी। इससे एमएसएमई के तहत आने वाली परियोजनाओं के लिए कर्ज की गारंटी मिलेगी, जोकि कर्ज लेने वालों की कर्ज की सुविधा का 25 फीसदी तक होगी। स्कीम का लाभ व्यक्ति, किसान उत्पादक संगठन यानी एफपीओ, सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यम क्षेत्र की कंपनियां आदि उठा सकती हैं। □□

आयुर्वेट डेस्क

कीटोसिस एवं नेगेटिव एनर्जी बैलेंस से छुटकारा पाएं

AYURVET™

कीटोरोक अपनाएं

कीटोरोक के फायदे

- लीवर की बेहतर सुरक्षा कर कीटोसिस से बचाव और इलाज में लाभदायक
- शरीर में सामान्य ग्लूकोज़ एवं ऊर्जा स्तर को बनाएं रखे
- दूध उत्पादन बढ़ाएं और अधिकतम उत्पादकता प्राप्त करने में मदद करे

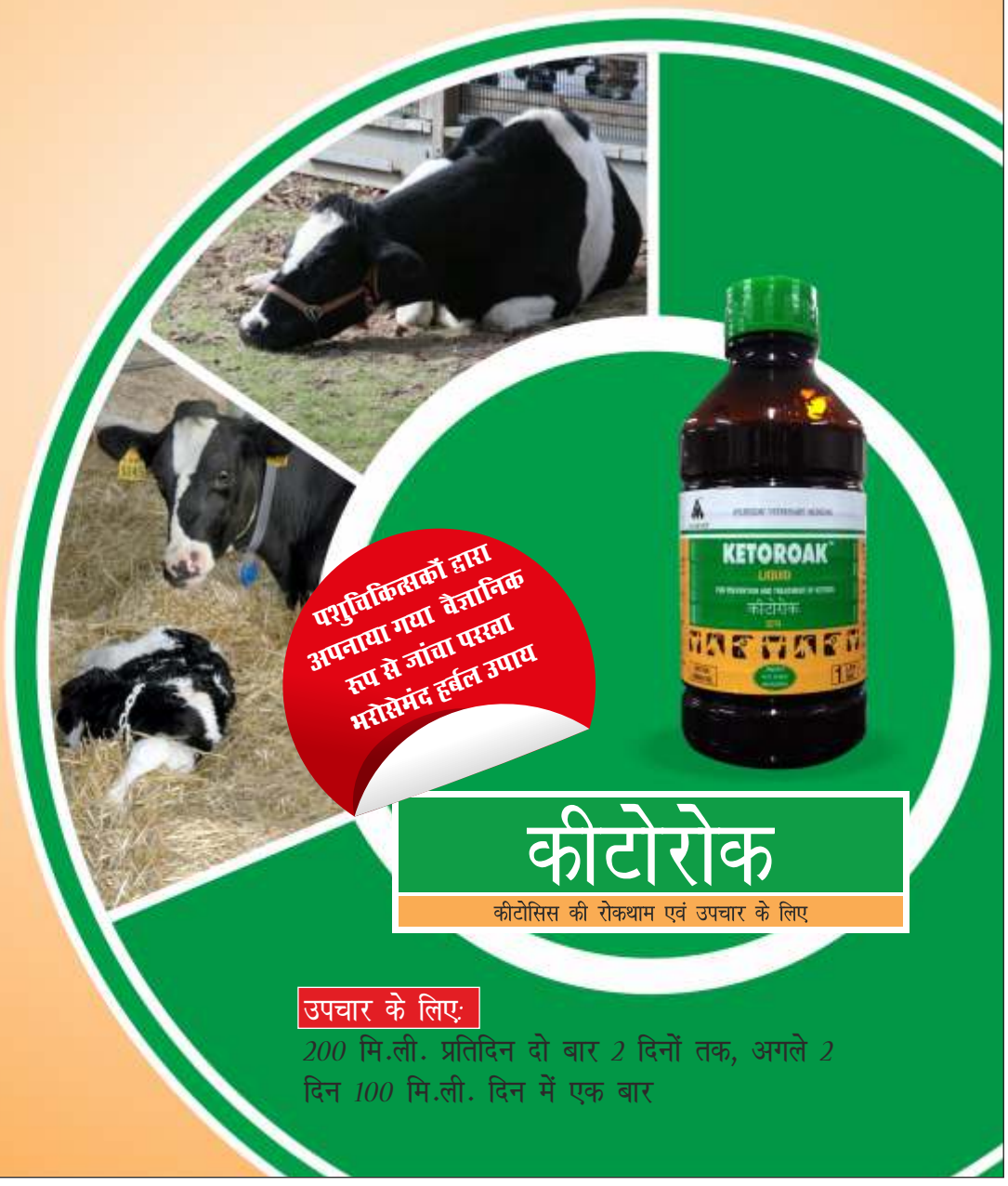

पशुचिकित्सकों द्वारा अपनाया गया वैज्ञानिक रूप से जांचा परखा भरोसेमंद हर्बल उपाय

कीटोरोक

कीटोसिस की रोकथाम एवं उपचार के लिए

उपचार के लिए:

200 मि.ली. प्रतिदिन दो बार *2* दिनों तक, अगले *2* दिन *100* मि.ली. दिन में एक बार

दुधारू पशुओं का प्रसव एवं प्रसवोपरांत प्रबंधन

-अवनीश कुमार सिंह एवं शशिकांत गुप्ता

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के साथ-साथ पशुपालन का भी विशेष योगदान है। भारत सरकार की 20 वीं पशुधन गणना के अनुसार हमारे देश में दूध उत्पादन करने वाली गायों एवं भैसों की कुल संख्या लगभग 12.5 करोड़ है, जिसमें पिछली पशुधन गणना के मुकाबले 6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, परन्तु हमारी उत्पादकता पशुओं की संख्या के मुकाबले काफी कम है, इसके कई सारे कारण हैं जिसमें प्रमुख है पशुपालकों को मादा दुधारू पशुओं का प्रसव एवं प्रसवोपरांत प्रबंधन की उचित जानकारी ना होना भी एक अहम कारण है। जानकारी की कमी व लापरवाही कठिन प्रसव को जन्म दे सकती है, जिसके फलस्वरूप मादा पशु के साथ-साथ भ्रूण की भी मृत्यु हो सकती है। इस समस्या से समाधान पाने हेतु इस आलेख में दी जाने वाली जानकारियां आपके लिए बहुत ही लाभकारी सिद्ध होगी।

दुधारू पशुओं में प्रसव तथा प्रबंधन

मादा पशु द्वारा बच्चे को जन्म देने की प्रक्रिया सामान्य गर्भकाल (गायों में 9 माह, 9 दिन एवं भैसों में 10 माह, 10 दिन) पूर्ण होने के बाद होती है। प्रसव के नजदीक आने पर पशुओं में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलते हैं जैसे-

- पशु के थनों में दूध का उतरना, सामान्यता यह प्रथम बार बच्चा देने वाली मादाओं में गर्भकाल के 4-5 माह से तथा 2 या 2 से अधिक बार बच्चे देने वाली मादाओं में प्रसव के लगभग 1 माह या 15 दिन पूर्व देखने को मिलता है।
- पशु के पेट के आकार में बदलाव।
- पशु का अन्य पशुओं से पृथक एवं बैचेन रहना।
- पशु का चारा-पानी कम कर देना।
- पशु के बाह्य जननांग (योनि) मे सूजन तथा ढीला पड़ जाना एवं तरल पदार्थ का स्राव होना।
- प्रसव के 24-48 घंटे पूर्व पशु के पुठे ढीले पड़ जाना।

प्रसव को बेहतर तरीके से समझने के लिए इसे 3 अवस्थाओं में विभक्त किया जा सकता है

1) प्रथम अवस्था 2) द्वितीय अवस्था 3) तृतीय अवस्था

प्रथम अवस्था

- इसकी समय अवधि लगभग 2-6 घंटे की होती है।
- पशु खाना-पानी छोड़कर एकांत स्थान पर दर्द से बैचेन होकर बार-बार उठता बैठता रहता है।
- पशु की योनि एवं पुठे ढीले पड़ जाते है।
- इस अवस्था मे बच्चेदानी में संकुचन प्रारम्भ होता है।
- इस अवस्था मे पशु की हृदय की गति बढ़ जाती है एवं शरीर का तापक्रम सामान्य से कम हो जाता है।
- इस अवस्था में बच्चेदानी का मुख खुल जाता है तथा साफ जेरी का रिसाव शुरू हो जाता है।

द्वितीय अवस्था

- यह अवस्था पहली पानी की थैली (पतला द्रव्य) फटने के साथ प्रारम्भ होती है।
- सामान्यता इसकी समय अवधि लगभग 0.5-3 घंटे की होती है, परन्तु प्रथम बार बच्चा देने वाले पशु में यह अवधि कुछ लम्बी भी हो सकती है।
- इस अवस्था के प्रारम्भ में बच्चे के पैरों के खुर योनि द्वार से दिखने लगते है।
- मादा पशु काफी जोर लगाती है।
- इस अवस्था मे द्वितीय पानी की थैली (गाढ़ा लिसलिसा द्रव्य) भी फट जाती हैं, जोकि योनि द्वार को चिकनाहट

प्रदान करता है।

- सामान्यता जब बच्चा योनि द्वार से निकलता है, तो उसके दोनों आगे के पैर सीधे होते और उसका सिर घुटनों पर रहता है, पशु के जोर लगाने से बच्चे के दोनों आगे के पैर एवं सिर सबसे पहले बाहर आ जाता है और पशु कुछ समय के लिये जोर लगाना बंद कर देता है।
- पशु फिर से जोर लगाना प्रारम्भ कर देता है और पूरा बच्चा मादा जननांग से बाहर आ जाता है। साथ ही गर्भनाल भी टूट जाती है।

तृतीय अवस्था

- यह प्रसव के बाद मादा पशु से जेर निकलने की अवस्था होती है।
- इसकी समय अवधि लगभग 6-12 घंटे की होती है। बच्चे के जन्म के लगभग 12 घंटे तक सामान्यता पशु जेर गिरा देता है।

प्रबंधन

- प्रसव की सही तिथि के लिए पशुपालक को पशु के कृत्रिम अथवा प्राकृतिक गर्भाधान की तारीख तथा पशु के सामान्य गर्भकाल के साथ ही उपरोक्त संकेतो की जानकारी होनी चाहिए।
- प्रसव से पूर्व पशु को शांत, साफ सुथरी, नमी रहित तथा हवादार जगह पर रखना चाहिए जहाँ पर स्वच्छ पेय जल उपलब्ध हो सके।
- यदि पशु 12 घंटे से ज्यादा बैचेन रहें और पानी की प्रथम थैली भी न फटे या प्रथम थैली फटने के बाद यदि पशु 1-2 घंटे से अधिक जोर लगाये फिर भी बच्चा बाहर न निकले, तो तत्काल पशुचिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिए।
- योनि द्वार से बच्चे को निकलते वक्त अनायास बच्चे को ना खीचें अन्यथा कठिन प्रसव की सम्भावना और बढ़ जाती है, जिसके फलस्वरूप मादा पशु के साथ-साथ भ्रूण की भी मृत्यु हो सकती है।
- यदि बच्चा निकलते वक्त पशु खड़ा हो तो बच्चे को सहारा दे, जिससे वह सीधा जमीन पर गिर कर चोटिल ना हो जाए।
- बच्चा होने के बाद बच्चे को पशु के पास रखना चाहिए तथा पशु के पिछले हिस्से व थनों को गुनगुने पानी से साफ करके किसी साफ कपड़े से पोछकर बच्चे को खीस (मादा पशु का पहला दूध) पिलाना चाहिए।
- यदि पशु बच्चा होने के 12 घंटे तक जेर ना गिराए, तो तत्काल ही पशुचिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिए। क्योंकि जेर अटकने से पशु की बच्चेदानी में संक्रमण की संभावना बहुत अधिक हो जाती है।
- पशु को जेर खाने नहीं देना चाहिए साथ ही जेर को गहरे गड्ढे मे दबा देना चाहिए।

प्रसवोपरांत मादा पशु का प्रबंधन

प्रसव के बाद मादा पशु की अच्छी तरीके से देखभाल एवं खानपान का विशेष ध्यान रखने से पशु की दूध उत्पादकता, प्रजनन क्षमता में वृद्धि के साथ पशु को बच्चेदानी के संक्रमण तथा अन्य कई बीमारियों से बचाया जा सकता है। इसके लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

- पशु को शांत, साफ सुथरी, नमी रहित, हल्के गर्म, हवादार तथा खुली जगह पर रखना चाहिए जहाँ पर स्वच्छ पेय जल एवं चारा उपलब्ध हो।
- पशु को अपने बच्चे को चाटने तथा खीस पिलाने देना चाहिए।
- पशु के पिछले हिस्सें व थनों को गुनगुने पानी से अच्छी तरह साफ करके किसी साफ कपड़े से पोछना चाहिए तथा बाह्य जननांगो को पक्षियों से बचाना चाहिए।
- यदि पशु के बाह्य जननांग पर कोई घाव हो तो उसकी नियमित सफाई करें तथा पशुचिकित्सक की सलाह से बताई गई दवा को लगाये।
- प्रसव के तुरन्त बाद पशु को गुनगुना पानी, गुड़ तथा अनाज की दलिया देनी चाहिए।
- पशु को गुणवत्तापरक हल्का चारा व 50 मिलीग्राम प्रतिदिन की दर से खनिज मिश्रण खिलाना चाहिए।
- अधिक दूध देने वाले पशुओं को रोजाना 100 मि.ली. कैल्शियम पिलाना चाहिए।

□□

मादा पशु प्रजनन रोग विभाग दुवासू, मथुरा

मछली पालन को मिले बढ़ावा ताकि गांवों में रहने वाले लोगों को कम लागत में मिले अधिक फायदा

-तरुण श्रीधर

मत्स्य पालन खाद्य और पोषण का प्रमुख स्रोत ही नहीं, बल्कि आय व आजीविका का भी अहम साधन है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार लगभग ढाई करोड़ लोग प्रत्यक्ष रूप से या तो मछुआरे का काम करते हैं या मत्स्य पालक हैं। और लगभग इससे दोगुनी संख्या यानी पांच करोड़ के आसपास व्यक्तियों का रोजगार और आमदनी मछली उत्पादन व आपूर्ति की लंबी कड़ी पर निर्भर है। चीन के बाद भारत विश्व का दूसरा बड़ा मछली उत्पादक देश है। गत वर्ष देश से लगभग 48,000 करोड़ रुपये की मछली का निर्यात किया गया। निरंतर सात फीसद से अधिक वार्षिक वृद्धि दर भी कृषि के अन्य उपक्षेत्रों से कहीं अधिक है। इस पृष्ठभूमि में केंद्र में मात्स्यिकी का पृथक विभाग बनाना एक सही व आवश्यक कदम था, जो पहले कर लिया जाना चाहिए था। मात्स्यिकी विभाग बनने के बाद घटनाक्रम तीव्रता से बढ़े।

लॉकडाउन के दौर में काम-काज थम जाने के कारण व्यापक संख्या में मजदूर गांव की ओर जा चुके हैं। ऐसे में उन सब को गांवों में ही रोजगार मुहैया करा पाना संबंधित राज्य सरकारों के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। वैसे कम लागत में अधिक लोगों को रोजगार दिलाने का एक जरिया पशुपालन, डेरी और मात्स्यिकी व्यवसाय को बनाया जा सकता है। भारत में पशुपालन व मात्स्यिकी क्षेत्र में एक रुपये के निवेश से चार रुपये प्रतिफल की संभावना है। हमारी आर्थिक में ऐसे विरले ही उद्यम होंगे जहां निवेश पर इस प्रकार का लाभ संभावित हो। इसके बावजूद ये क्षेत्र या तो उदासीनता के शिकार रहे हैं या फिर प्राथमिकताओं की अंतिम सीढ़ी पर। कारण शायद यह भी रहा कि प्रारंभ से ही पशुपालन, डेरी व मात्स्यिकी विभाग कृषि मंत्रालय के अधीन रहा। और इसे अधीनों की तरह ही रखा गया।

पशुपालन का कार्य भी आकर्षक व मोहक नहीं है। मंत्री व उच्च अधिकारी भी अक्सर इस विभाग को दूर से ही सलाम कर खुश हैं। परंतु अब एक आशा की किरण दिखाई दे रही है। इसकी नींव रखी गई थी फरवरी 2019 में जब केंद्र सरकार ने मात्स्यिकी को पशुपालन एवं डेरी से अलग कर एक विभाग बनाया। इस क्षेत्र की महत्ता को इससे पूर्व 2014 में सरकार द्वारा महत्वाकांक्षी योजना नीली क्रांति के लोकार्पण के साथ रेखांकित किया जा चुका था। किंतु पशुपालन व डेरी विभाग का हिस्सा और कृषि मंत्रालय के अधीन होने के कारण नीली क्रांति पर पूरी तरह ध्यान देना संभव नहीं होने से योजना का पूरा फल पाना कठिन हो रहा था।

मत्स्य पालन खाद्य और पोषण का प्रमुख स्रोत ही नहीं, बल्कि आय व आजीविका का भी अहम साधन है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार लगभग ढाई करोड़ लोग प्रत्यक्ष रूप से या तो मछुआरे का काम करते हैं या मत्स्य पालक हैं। और लगभग इससे दोगुनी संख्या यानी पांच करोड़ के आसपास व्यक्तियों का रोजगार और आमदनी मछली उत्पादन व आपूर्ति की लंबी कड़ी पर निर्भर है। चीन के बाद भारत विश्व का दूसरा बड़ा मछली

उत्पादक देश है। गत वर्ष देश से लगभग 48,000 करोड़ रुपये की मछली का निर्यात किया गया। निरंतर सात फीसद से अधिक वार्षिक वृद्धि दर भी कृषि के अन्य उपक्षेत्रों से कहीं अधिक है। इस पृष्ठभूमि में केंद्र में मात्स्यिकी का पृथक विभाग बनाना एक सही व आवश्यक कदम था, जो पहले कर लिया जाना चाहिए था। मात्स्यिकी विभाग बनने के बाद घटनाक्रम तीव्रता से बढ़े।

साथ ही बना एक नया मंत्रालय मात्स्यिकी, पशुपालन एवं डेरी मंत्रालय। कृषि मंत्रालय के अधीनस्थ विभाग अब बना स्वतंत्र मंत्रालय और इसके नामकरण में मात्स्यिकी को मिला प्रमुख स्थान। इसके बाद दस जून को भारत सरकार के सचिवों को अपने संबोधन में ही प्रधानमंत्री ने सरकार की मंशा को यह कह कर स्पष्ट कर दिया कि मात्स्यिकी, मछली पालन, डेरी व पशुपालन सरकार की प्राथमिकताएं होंगे। 20,050 करोड़ रुपये के प्रस्तावित परिव्यय और पांच वर्ष के सीमा काल में क्रियान्वयन के साथ मात्स्यिकी की यह अब तक की सबसे महत्वाकांक्षी योजना है।

इसकी विशेषता यह है कि योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए वित्तीय संसाधन का प्रबंध केंद्र ही करता है। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना का खर्च पूर्व की स्कीम नीली क्रांति के व्यय से लगभग दस गुना अधिक है। किसी भी क्षेत्र में वित्तीय परिव्यय में इतनी अधिक वृद्धि अप्रत्याशित है। इससे पूर्व और इसके अतिरिक्त सरकार ने 7,522 करोड़ के मात्स्यिकी अवसंरचना विकास निधि की भी स्थापना की है। इस निधि से तीन से चार प्रतिशत सस्ती ब्याज दरों पर मात्स्यिकी व मत्स्य पालन में आधारभूत संरचना के लिए धन प्राप्त किया जा सकता है। कुल मिला कर अब इस क्षेत्र में वित्तीय संसाधन

हितधारकों की उम्मीदों से कहीं अधिक हैं, इनके सार्थक और फलप्रद उपयोग के लिए व्यवस्था को अपनी क्षमता भी सुधारनी होगी।

जहां हम इस बात पर गर्व करते हैं कि मछली उत्पादन व व्यापार में हम अग्रणी देशों में हैं, वहीं चिंता का विषय है उत्पादकता और गुणवत्ता। हमारी क्षमता व उपलब्धि के बीच अंतर बहुत बड़ा है। इसकी पूर्ति करना इस योजना का एक मुख्य उद्देश्य है। इसमें आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग, आधारभूत सुविधाओं का निर्माण, सतत एवं स्थायी विकास हेतु प्रबंधन आदि पर बल दिया गया है। सराहनीय बात यह है कि योजना में मछुआरों की कमजोर सामाजिक स्थिति को पहचानते हुए इन समुदायों की सामाजिक सुरक्षा का भी उपयुक्त प्रावधान है। उत्पादकता और आर्थिक लाभ के फेर में अक्सर सामाजिक पहलू की अनदेखी हो जाती है।

परिकल्पना यह है कि 2024-25 में योजना की समाप्ति पर वर्तमान सात की बजाय नौ फीसद वार्षिक विकास की दर से देश का मछली उत्पादन 22 मिलियन टन तक पहुंचने की संभावना है। गेंद अब मात्स्यिकी विभाग के पाले में है। कोरोना के दुष्प्रभाव ने यह कार्य अधिक चुनौतीपूर्ण बना दिया है। आपूर्ति तो बाकी अर्थव्यवस्था की भांति बाधित हुई ही है, मात्स्यिकी की विशेष परिस्थिति है मछली का जैविक चक्र। इस पर मनुष्य की व्यवस्था नहीं चलती। मछली को कब तालाब से निकालना है, इस पर समझौते की गुंजाइश नहीं रहती। आर्थिक व व्यावसायिक परिवेश में विघ्न के कारण आने वाले समय में इसकी पूर्ति के लिए विशेष प्रबंध करने होंगे।

□□

पूर्व सचिव, भारत सरकार

गर्मी के मौसम में पशुओं में हीट स्ट्रेस के लक्षण तथा उसका बचाव

-डॉ. प्रमोद प्रभाकर एवं डॉ. मनोज कुमार भारती

गर्म मौसम प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनो प्रकार से पशुओं की उत्पादन क्षमता को प्रभावित करता है, अधिकतम क्षमता हेतु पर्यावरणीय परिस्थितियों के साथ-साथ पशुओं की खुराक में भी परिवर्तन लाना अति आवश्यक है। दूध देने वाली संकर नस्ल की गायों के लिए लगभग 25 डिग्री सेल्सियस का तापमान आरामदेह होता है, परन्तु इससे अधिक गर्मी होने पर इनकी दुग्ध-उत्पादन क्षमता काफी कम हो जाती है। गर्म मौसम में शारीरिक तापमान बढ़ जाता है, जिससे दुग्ध-उत्पादन क्षमता प्रजनन क्षमता तथा शारीरिक वृद्धि दर में कमी आ जाती है। उच्च तापमान एवं नमी-युक्त वातावरण में ऊष्मा हानि कम हो जाती है, जो दुग्ध-उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

पशु हीट स्ट्रेस में हैं इसे कैसे पहचानेगे

गाय समान्यतः एक मिनट में 15 से 30 बार सांस लेती है। गाय में अगर सांस लेने की रफ्तार एक मिनट में 50 से अधिक हो तो हम कहेंगे कि वह हीट स्ट्रेस का शिकार हो गई है। जैसे ही पशु हीट स्ट्रेस में आएगा तो वह हांफने लगेगा। उसकी जीभ बाहर आ जाएगी।

गर्म मौसम में पशुओं का तापमान नियंत्रित रखने के लिए अपनाई जाने वाली विधियां

- पशुओं के शेड का तापमान कम रखने के लिए इनकी संरचना में सुधार किया जाता है।
- पशुओं पर फव्वारे द्वारा पानी डाल कर पंखे चलाए, ताकि उनको शरीर को ठंडा रखा जा सकें।
- भोज्य ऊर्जा उपयोगिता की क्षमता बढ़ाकर खाने के समय उत्पन्न होने वाली ऊष्मा में कमी लाई जा सकती है।
- गर्म मौसम में विभिन्न कारकों से पशुओं की उत्पादन क्षमता प्रभावित होती है। वायु नमी के कारण त्वचा तथा श्वसन नली से वाष्पोत्सर्जन द्वारा होने वाली ऊष्मा-हानि पर प्रभाव पड़ता है। अतः अधिक तापमान पर नमी, दुधारू पशुओं की उत्पादन क्षमता को काफी हद तक कम कर देती है।
- गर्मी एवं नमी में अधिक समय तक खड़े रहते है, ताकि वाष्पोत्सर्जन द्वारा अपने शरीर से अधिकाधिक उष्मा वायु में छोड़ सकें।
- हवाओं के कारण पशुओं के शरीर से होने वाली-ऊष्मा हानि संवहन तथा वाष्पोत्सर्जन द्वारा होती है।
- कम तापमान पर हवाओं के चलने से दुग्ध उत्पादकता प्रभावित नहीं होती, परन्तु अधिक तापमान पर हवा चलने से पशुओं को लाभ होता है।
- गर्मियों के मौसम में पशुओं द्वारा उत्पन्न की गई ऊष्मा ताप-तनाव का मुख्य कारण होती है।
- गर्म मौसम में पशुओं के रखरखाव उत्पादन हेतु ऊर्जा की मांग तो अधिक होती है, जबकि सकल ऊर्जा की कार्यक्षमता कम हो जाती है।
- तापमान अधिक होने पर भी चारे की खपत कम हो जाती है। अतः गर्म मौसम में पशुओं की ऊर्जा आवश्यकताएं पूर्ण करने हेतु इनको ऊर्जायुक्त आहार खिलाने की आवश्यकताएं पड़ती है।
- गर्मियों में गायों से अधिक दूध प्राप्त करने से लिए उन्हें अधिक वसा-युक्त आहार खिलाए जा सकते है। ऐसे आहार खिलाने से इनके शारीरिक तापमान में कोई वृद्धि नहीं होती

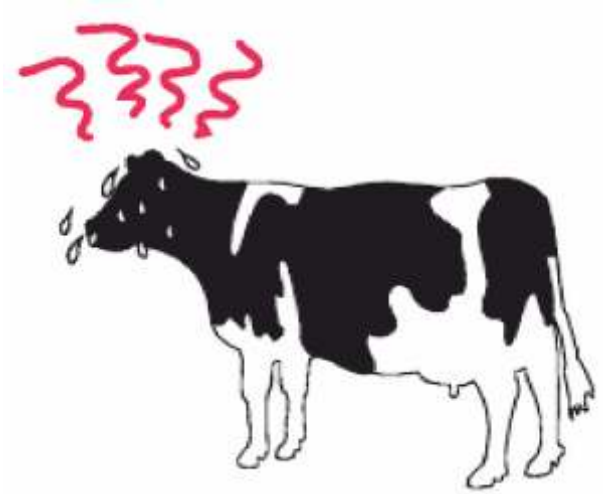

तथा श्वसन दर भी भी सामान्य बनी रहती है।

- अधिक मात्रा में प्रोटीन-युक्त आहार लेने से ऊष्मा का उत्पादन भी बढ़ जाता है। ऐसे आहार खिलाने से इनको पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन-युक्त आहार लेने से ऊष्मा का उत्पादन भी बढ़ जाता है, जिसका प्रजनन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
- गर्म मौसम में दुधारू गायों की अधिक प्रोटीन की आवश्यकता होती है। पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन न मिलने से इनकी पशु पदार्थ ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है।
- गायों को बाई पास प्रोटीन देने से इनकी उपलब्धता अधिक होती है, जिसमें वसा उत्पादन में वृद्धि होती है।
- धूप से सीधे बचाव के लिए साधारण शेड के आसपास पेड़-पोधे लगाकर इसे ओर ठंडा एवं प्रभावशाली बनाया जा सकता है। शेड के कारण डेरी पशुओं का शारीरिक तापमान एवं श्वसन दर सामान्य बनी रहती है।

- इसी तरह कम तापमान पर तेजी से चलने वाली हवा के कारण पशुओं से ऊष्मा अधिक तीव्रता से निकलती है। इससे सामान्य ताप-तनाव के कारण इनकी उत्पादकता में कमी आ जाती है।
- पशुओं के सिर एवं गर्दन को ठंडा रखा जाएं, तो ये अधिक चारा ग्रहण करते है, जिससे दुग्ध उत्पादन बढ़ जाता है।

गर्मी के इस मौसम में पशुओं का खान पान कैसा हो ताकि वह हीट स्ट्रेस से बचे रहे

- गर्मी के इस मौसम में पशु खाना कम कर देते है। इसके कारण जितना चारा वह खाते है उससे ऊर्जा, प्रोटीन और विटामिन मिनरल्स की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है। इसलिए गर्मी के मौसम में पशुओं के खान पान का विशेष ध्यान रखना होता है।
- गर्मी के मौसम में पानी सबसे महत्वपूर्ण है इसलिए इस

मौसम में पशुओं को भरपूर मात्रा में साफ और शीतल जल पिलाएं। धूप में रखा हुआ पानी कदापि ना दें।

- गर्मी के मौसम में भूसे की मात्रा कम कर दें और रातिब मिश्रण की मात्रा बढ़ा दें।
- इस समय कोशिश करें कि पशु को जो भी हरा चारा दिया जाए वह मुलायम हो। इस मौसम में चूकि पशु कम चारा खायेगा इसलिए पर्याप्त ऊर्जा और प्रोटीन की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए रातिब मिश्रण में ऊर्जा और प्रोटीन की मात्रा को बढ़ा दे। इसके लिए कोई भी अनाज जैसे गेहूं चावल, ज्वार, बाजरा, ऊर्जा की आपूर्ति बढ़ाने के लिए पशुओं को प्रतिदिन 100 ग्राम तक सरसों का तेल भी दिया जा सकता है। इस समय पशु की इलेक्ट्रोलाईट्स की आवश्यकता बढ़ जाती है। इसलिए पशुओं को प्रोब्लेण्ड पाउडर 50 से 100 ग्राम प्रतिदिन दिया जा सकता है। इसे देने से इलेक्ट्रोलाईट्स बैलेंस बना रहेगा।
- इसके अलावा, पशुओं को चारा दाना सुबह और शाम को ठंडक के समय ही दे।
- पशुशाला में गर्मी से बचाव के पर्याप्त इंतजाम करें जैसे फर्राटा पंखे लगा दे। हो सके तो फोगर लगा दे।
- पशुओं को ज्यादा देर धूप में ना रखें।
- कोई पशु हीट स्ट्रेस से ग्रसित दिखे, तो तुरंत चिकित्सीय सहायता ले।

अतः पशुपालक अपने पशुओं की गर्मियों के मौसम में उचित देखभाल कर अधिक लाभ ले सकते है।

□□

सहा. प्रा. सह क. वैज्ञानिक, पशुपालन मं. भा. कृ महावि., अगवानपुर, सहरसा एवं टी. भी. ओ. सहरसा

अधिक दुग्ध उत्पादन हेतु गर्भित एवं नवजात पशुओं की देखभाल एवं प्रबन्धन

-डॉ. एस.एस. कश्यप, डॉ. के.डी. सिंह एवं डॉ. विशुद्धानन्द

गर्भावस्था में पशुओं की देखभाल अन्य पशुओं की अपेक्षा अधिक करनी पड़ती है। गर्भित होने के पश्चात् एक गाय लगभग 9 महीने 9 दिन तथा भैंस 10 महीने 10 दिन में बच्चा देती है। पशु के गर्भित होने से लेकर ब्याने तक सामान्यतः अनेक जरूरी सावधानियाँ रखनी चाहिये। प्रस्तुत आलेख में इन्हीं का जिक्र किया गया है, जोकि पशुपालकों के लिए बहुत ही उपयोगी साबित होगी।

गर्भावस्था में पशुओं की देखभाल अन्य पशुओं की अपेक्षा अधिक करनी पड़ती है। गर्भित होने के पश्चात् एक गाय लगभग 9 महीने 9 दिन तथा भैंस 10 महीने 10 दिन में बच्चा देती है। पशु के गर्भित होने से लेकर ब्याने तक सामान्यतः निम्नलिखित सावधानियाँ रखनी चाहिये।

- गर्भित पशु को शान्त वातावरण में रखा जाएं।
- पशु को केवल आवश्यक साधारण व्यायाम ही कराया जाए, न उसे दौड़ाया जाए न अन्य पशुओं द्वारा उसे परेशान किया जाए।
- गर्भित पशु को नियमित रूप से अच्छे चारागाह में भेजा जाए।
- ब्याने की अनुमानित तिथि से 2 माह पूर्व से पशु का दूध लेना बन्द कर देना चाहिये तथा उसके दाने में वृद्धि कर देनी चाहिये, यह वृद्धि दूध देते समय की आधी होनी चाहिये।
- दाना सुपाच्य एवं स्वादिष्ट होना चाहिये, भीगा या चिपचिपा नहीं।
- एक गर्भित गाय/भैंस को साधारणतया 30-35 कि.ग्रा. हरा चार, 3-4 कि.ग्रा. सूखा चारा (भूसा इत्यादि), 2-3 कि.ग्रा. दाना एवं 50 ग्राम नमक प्रतिदिन दिया जाना चाहिये।
- यदि पशु को मुख्य रूप से सूखे चारे पर रखना है, तो उसे 5-8 कि.ग्रा. भूसा और 5-10 कि.ग्रा. हरा चारा दिया जाना चाहिये।

- वर्षा ऋतु में लोबिया, मक्का का हरा चारा अथवा लोबिया/ज्वार की कुट्टी का मिश्रण उत्तम रहता है।
- ब्याने के लगभग 6 सप्ताह पूर्व पशु की विशेष खिलाई-पिलाई आवश्यक होती है।
- पशु के ब्याने के 15 दिन पूर्व उसे अन्य पशुओं से अलग कर दिया जाना चाहिये।
- जिन पशुओं के ब्याने के पूर्व दूध उतर आता है उन्हें ब्याने के पहले नहीं दुहना चाहिये, इससे गर्भकाल बढ़ जाता है तथा ब्याने की प्रक्रिया कष्टकारी हो सकती है।
- पशु को ब्याने के समय शान्त वातावरण में स्वच्छ एवं बिछावनयुक्त स्थान में रखना चाहिये।
- पशु को यथा सम्भव प्रतिकूल मौसम से सुरक्षित रखना चाहिये।
- ब्याने के पश्चात बछड़े की नाल को काट कर उस पर टिंक्चर आयोडीन लगा देना चाहिये।
- शिशु को गुनगुने पानी में भीगे हुए तौलिए से साफ करना चाहिये।
- नवजात शिशु के नथुने एवं मुँह को साफ करके कोलस्ट्रम पिलाना चाहिये।
- ब्याने के 2-4 घण्टे के पश्चात् जेर स्वतः निकल जाती है, किन्तु यदि 8 घण्टे तक भी जेर स्वतः न निकले तो उसे निकालने के उपाय करने चाहिये।
- जेर निकलने पर इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि उसे पशु खा न ले, जेर को गहरे गड्ढे में गाड़ देना चाहिये।
- ब्याने के स्थान (Calving pen) की सफाई फिनायल के घोल से समुचित रूप से करनी चाहिये।
- अधिक दूध देने वाले (Heavy yielder) पशुओं से एक बार में पूरी खीस (कोलस्ट्रम) न निकालें, बल्कि थोड़ा-थोड़ा

करके दिन में 3-4 बार निकालें। एक बार में पूरी खीस निकालने से मिल्क फीवर की आशंका होती है।

- तुरन्त ब्याये हुए पशु को गेहूँ का दलिया, गुड़, सोंठ एवं अजवाइन आदि मिलाकर हल्का पका कर खिलाना चाहिये।
- पीने हेतु गुनगुना पानी इच्छानुसार देना चाहिये।

गर्भावस्था में आहार व्यवस्था

- गर्भित गाय के निर्वाह एवं उत्पादन के ऊपर एवं भ्रूण के विकास हेतु (गर्भित होने के 5-6 माह बाद) 0.14 किलो पाचक प्रोटीन (D.C.P.), 0.7 कि.ग्रा. सम्पूर्ण पाचक तत्व (T.D.N.) 12 ग्राम कैल्शियम, 7 ग्राम फास्फोरस तथा 30 मिग्रा. विटामिन 'ए' मिलना चाहिये।
- उपरोक्त आवश्यकता 1.5 किग्रा. अच्छा पौष्टिक मिश्रण देने से पूरी हो जाती है एवं साथ में दाने में 2 प्रतिशत कैल्शियम कार्बोनेट और मिला दिया जाता है।
- यदि इस अवधि में गाय दूध दे रही हो तो उसका दूध सुखा देना चाहिये।
- गर्भित गाय के ब्याने के एक या दो सप्ताह पूर्व चोकर तथा अलसी की खली दे कर दाने की मात्रा बढ़ा देनी चाहिये।
- पशु के ब्याने के पश्चात् तुरन्त कार्बोहाइड्रेट युक्त चारा खिलाना चाहिये।
- ब्याने के पश्चात् 3-4 दिन तक तैलीय खली (Oil cakes) नहीं देनी चाहिये।
- दाने की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ानी चाहिये, जिससे एक या दो सप्ताह में पशु अपनी आवश्यकतानुसार अधिक से अधिक दाना खा सके। बाद में पशु को निर्वहन एवं उत्पादन आवश्यकता से ऊपर लगभग 0.5 किग्रा. सम्पूर्ण पाचक तत्व (T.D.N.) प्रतिदिन और देना चाहिये।
- ब्याने के बाद गर्भाशय की सफाई के लिये पशु को औटी दी जा सकती है न कि जौ का आटा या अरहर की दाल।
- पशु को संतुलित चारा ही दिया जाए।

नवजात शिशुओं की आहार व्यवस्था

- जन्म के पश्चात् प्रथम 3 दिन तक खीस पिलानी चाहिये, खीस में विटमिन 'ए' तथा एण्डीबॉडीज होते हैं, जिनसे बच्चों की विभिन्न बीमारियों से रक्षा होती है।
- यदि किसी कारणवश खीस उपलब्ध न हो तो 1/2 चम्मच अण्डी का तेल, 1/2 पिंट में फेंटा हुआ एक अण्डा, एक पिंट गर्म दूध मिलाकर पहले 3 दिन तक दें, इसे दिन में 3 बार तक दिया जा सकता है।
- 1 से 2 माह तक के बछड़े को उसके शरीर के 10वाँ भाग की मात्रा में दूध पिलाना चाहिये। प्रारम्भ से लगभग 2.5 लीटर दूध देकर दूसरे माह में 3.5 लीटर दूध पिलाना चाहिये।
- 2 माह के पश्चात् धीरे-धीरे सम्पूर्ण दूध के स्थान पर सेपरेटेड मिल्क देना चाहिये।
- ऊर्जा पूर्ति के लिये 1 माह की आयु से ही थोड़ा-थोड़ा पौष्टिक मिश्रण, पूरक आहार रूप में देना शुरू करें।
- दाने की मात्रा 1 मुट्ठी से प्रारम्भ कर धीरे-धीरे बढ़ानी चाहिये जिससे 6 माह में यह 1.5 किग्रा. तक पहुंच जाये।
- चौथे माह से सेपरेटेड मिल्क कम कर देना चाहिये।

बछड़े के लिये पौष्टिक मिश्रण

- जौ, जई या मक्का (दला हुआ)-45 भाग, मूंगफली की खली-35 भाग, चोकर-17 भाग, खड़िया-2 भाग, नमक-1 भाग।

- छोटे बच्चों को तामचीनी के तसले में दूध पिलाना चाहिये।
- पैदा होने के प्रथम 2 सप्ताह तक बछड़े को दिन में 3-4 बार दूध पिलाना चाहिये।
- बछड़े को कम से कम 5 दिन तक सम्पूर्ण दूध पिलाना चाहिये।
- विटामिन की कमी को पूरा करने के लिये मछली का तेल पिलाया जा सकता है।
- यदि दुग्ध परिवर्तन काल में बछड़े को दस्त आने लगें, तो उसे 24 घण्टे भूखा रख कर उबाला हुआ पानी. 2 औंस अण्डी का तेल पिलाना चाहिये तथा आवश्यकतानुसार एंटीबायोटिक या सल्फाड्रग्स भी देनी चाहिये।
- बछड़ों के आहार में एकाएक परिवर्तन नहीं करना चाहिये, यह परिवर्तन क्रमिक होना चाहिये। □□

विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र, संत कबीर नगर
सहायक प्राध्यापक, पशुधन प्रक्षेत्र विभाग, पशुचिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज-अयोध्या (उ.प्र.)

थनैला की समस्या है बहुत भारी, रोकथाम में ही है समझदारी।
समय से जांच और उपचार, करें हम इस पर विचार।।

AYURVET

मैस्टीलेप के फायदे

- *रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं एवं थनैला से बचाएं*
- *स्वच्छ दूध उत्पादन में सहायक*
- *थन की सूजन एवं दर्द कम कर पशु को आराम दिलाएं*

मैस्टीलेप
50 ग्राम, 125 ग्राम ट्यूब
तथा 125 मि.ली. स्प्रे
में भी उपलब्ध है।

मैस्टीलेप

थनैला रोग की रोकथाम के लिये हर्बल जैल

वृक्षोत्सव (1-7 जुलाई)

मानव जीवन में वृक्षों का विशेष महत्व है। वन महोत्सव भारत में जुलाई महीने के पहले सप्ताह में मनाया जाता है। इन दिनों देश भर में लाखों की संख्या में पेड़-पौधे लगाए जाते हैं। कुछ वर्षों में जंगलों और वृक्षों की होती अँधा-धुंध कटाई के कारण वातावरण का संतुलन बिगड़ गया है और मौसम में काफी बदलाव आ गया है, लगातार तापमान में बढ़ोतरी हो रही है, जिसे देखते हुए वृक्ष लगाना अनिवार्य हो गया है।

वृक्ष हमारे जीवन में अहम् भूमिका निभाते हैं। यह हमारे द्वारा छोड़े गए कार्बनडाइऑक्साइड गैस को खींच लेते हैं और हमें ऑक्सीजन देते हैं। इसीलिए भविष्य में वातावरण को संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्ष लगाना आवश्यक है। वृक्ष ही भूमि को बंजर होने से रोकते हैं। वृक्षों से ही कई प्रकार की जड़ी बूटियां तैयार की जाती हैं। इसीलिए हमें ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने चाहिए। वन महोत्सव का मुख्य उद्देश्य लोगों को पेड़ों के प्रति जागरूक करना है। वन महोत्सव सन् 1950 में शुरू किया गया था। भारत देश में पेड़ों की विशेष रूप से पूजा की जाती है यहां के लोग पेड़ों को देवता के रूप में पूजते हैं।

विश्व जनसंख्या दिवस (11 जुलाई)

पूरे विश्व में हर साल 11 जुलाई को जनसंख्या दिवस मनाया जाता है। देश और विश्व में लगातार बढ़ती जनसंख्या को देखते हुए, विश्व जनसंख्या दिवस पर जागरुकता फैलाने के साथ ही इसके दुष्परिणामों पर भी प्रकाश डाला जाता है। 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस मनाने की शुरुआत 1989 में, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की संचालक परिषद द्वारा हुई थी। वैश्विक हितों को ध्यान में रखते हुए इस दिवस को मनाने और जारी रखने का निर्णय लिया गया। वास्तव में विश्व जनसंख्या दिवस को मनाना तभी सार्थक हो सकता है जब हम बढ़ती जनसंख्या के प्रति जागरुक रवैया अपनाएं और इसके विभिन्न पहलुओं व हितों पर ध्यान देते हुए जनसंख्या विस्फोट में कमी लाने का प्रयास करें। जनसंख्या वृद्धि के विभिन्न कारणों पर विचार कर इनके लिए उपायों पर ध्यान देना भी उतना ही जरुरी है।

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के सजिल्द अंक उपलब्ध

हमारे बहुत से पाठक आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के अंकों को संजोकर रखते हैं, लेकिन कई बार उनसे वह अंक छूट जाते हैं। इसके अलावा, बहुत से ऐसे लोग हैं, जो आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के वर्ष 2017 के 12 अंक प्राप्त करना चाहते हैं। उनके लिए खुशखबरी यह है कि इस वर्ष यानि वर्ष 2017 के सभी अंक बाइंड कर सजिल्द उपलब्ध करवाएं जा रहे हैं। इसके अलावा, वर्ष 2016 के सजिल्द अंकों की भी कुछ प्रतियां उपलब्ध हैं। चूंकि इसकी प्रतियां सीमित हैं अत: आपसे अनुरोध है कि अपनी प्रति जल्द से जल्द बुक करवाएं। एक सजिल्द प्रति की कीमत 400/- रुपए (डाक खर्च अलग) है। राशि ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली के नाम भिजवाएं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-
दूरभाष: 91-120-7100201

AYURVET™

जब भी पशु करे
खाने में आनाकानी

महीने में दें
सात दिन
दूध पायें
रात दिन

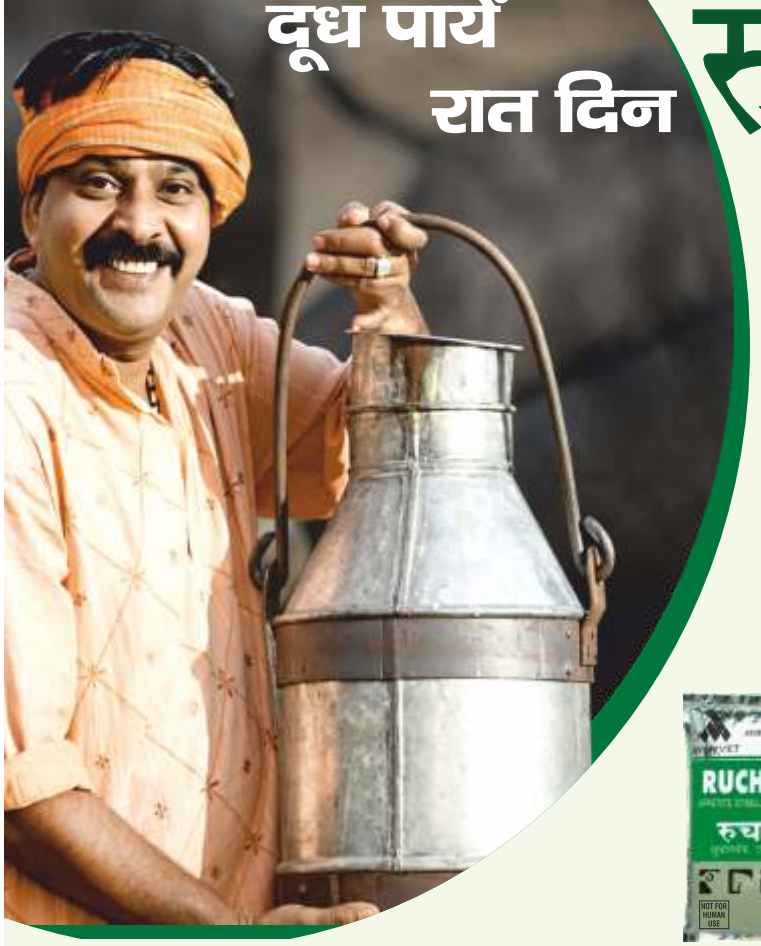

रुचामैक्स
दूर करे परेशानी

रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक

आधुनिक ब्रायलर उत्पादन

-डॉ संजय कुमार मिश्र

ब्रायलर मांस के लिए 6 से 7 सप्ताह के उस युवा नर अथवा मादा कुक्कुट पक्षी को कहते हैं, जिसकी त्वचा कोमल तथा छाती की अस्थि या कार्टिलेज लचीली विशेषताओं से भरपूर हो। पशु प्रजनन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि ब्रायलर की तेजी से बढ़ती हुई उत्पादन क्षमता तथा उत्पादन खर्च में भारी कमी को कहा जा सकता है । आज केवल 6 सप्ताह में 2 किलोग्राम वजन देने वाले ब्रायलर उपलब्ध है 2 किलोग्राम वजन के ब्रायलर के लिए, लगभग 3.20 किलोग्राम दाने की आवश्यकता होती है। ब्रायलर का उत्पादन भारत में निरंतर तेजी से बढ़ रहा है।

ब्रायलर मांस के लिए 6 से 7 सप्ताह के उस युवा नर अथवा मादा कुक्कुट पक्षी को कहते हैं, जिसकी त्वचा कोमल तथा छाती की अस्थि या कार्टिलेज लचीली विशेषताओं से भरपूर हो। पशु प्रजनन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि ब्रायलर की तेजी से बढ़ती हुई उत्पादन क्षमता तथा उत्पादन खर्च में भारी कमी को कहा जा सकता है । आज केवल 6 सप्ताह में 2 किलोग्राम वजन देने वाले ब्रायलर उपलब्ध है 2 किलोग्राम वजन के ब्रायलर के लिए, लगभग 3.20 किलोग्राम दाने की आवश्यकता होती है। ब्रायलर का उत्पादन भारत में निरंतर तेजी से बढ़ रहा है।

इस बढ़ते हुए उत्पादन के पीछे कई कारणों का सामूहिक योगदान रहा है, परंतु सबसे अधिक महत्वपूर्ण कारण कम समय में ब्रायलर की फसल प्राप्त होना व अन्य पशुओं के मांस की अपेक्षा ब्रायलर मांस अधिक पसंद किया जाना है। सफल ब्रायलर उत्पादन के लिए निम्न बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए:-

- तेजी से बढ़ने की क्षमता वाले ब्रायलर चूजे प्राइवेट अथवा सरकारी संस्थाओं से प्राप्त किए जा सकते हैं। अच्छी चूजों की प्राप्त के लिए रेंडम ब्रायलर टेस्ट के परिणामों को देखने के बाद ही बाजार से विशेष संकर नस्ल के चूजे प्राप्त करें।
- **ब्रूडर घर:** 1 दिन से 6 सप्ताह तक के चूजे पालने के स्थान को ब्रूडर घर कहते हैं। संक्रामक रोगों से बचाव के लिए चूजों को बड़ी मुर्गियों से दूर पालना चाहिए। ब्रूडर घर में वायु का आवागमन अच्छा तथा तापक्रम भी उचित रहना चाहिए।
- ब्रायलरों के लिए प्रति वर्ग मीटर केवल 10 से 12 चूजे ब्रूडर घर में पालें। चूजों के लिए संतुलित आहार तथा स्वच्छ पानी की व्यवस्था ब्रूडर में होनी चाहिए। समय-समय पर ब्रूडर की सफाई होती रहनी चाहिए। ब्रूडर में चूजों का वातावरण परिवर्तित नहीं होना चाहिए।
- ब्रूडिंग उपकरणों के लिए बाजार से बिजली के बल्बों अथवा इंफ्रारेड होवर आसानी से प्राप्त किए जा सकते हैं। इनके नीचे 250 से 300 चूजे प्रति होवर के हिसाब से रखे जा सकते हैं। कार्ड बोर्ड अथवा टीन से बना चिक गार्ड लगभग 30 सेंटीमीटर ऊंचाई का लगा सकते हैं।
- **दानों के बर्तन या फीडर:** चूजों तथा बड़े ब्रायलरों को अलग-अलग आकार के फीडरों की आवश्यकता होती है। 4 सप्ताह तक 4 से 5 सेंटीमीटर तथा 5 से 6 सप्ताह तक आठ लीनियर सेंटीमीटर आहार के स्थान की आवश्यकता पड़ती है। फीडर की लंबाई 5 फुट होनी चाहिए।
- स्वच्छ पानी की व्यवस्था के लिए एल्युमीनियम अथवा प्लास्टिक के बर्तन 2 लीटर क्षमता के दो बर्तन 2 सप्ताह की आयु तक तथा 4 से 5 लीटर क्षमता के दो बर्तन 6 सप्ताह तक 100 ब्रायलर चूजों के लिए पर्याप्त होते हैं। टिन के डिब्बे विशेष प्लेट के साथ प्रयोग किए जा सकते हैं।
- **ब्रायलर उत्पादन व्यवस्था:** चूजों के उचित पालन पोषण हेतु

निम्नलिखित विशेष बातों का ध्यान रखना चाहिए-

- ब्रूडर घर को चूजों के आने से 15 दिन पूर्व 5 प्रतिशत फिनायल के घोल से अच्छी तरह साफ करें। बिछावन या लिटर के लिए सूखा साफ चावल का छिलका अथवा लकड़ी का बुरादा 6 से 8 सेंटीमीटर की तह के रूप में प्रयोग करना चाहिए। लिटर के ऊपर तीन तहों वाला अखबार बिछाना चाहिए, जिससे कि चूजे लीटर न खाएं। अखबार को 1 सप्ताह के बाद हटा दें। ब्रायलर चूजों के आने से 45 घंटे पूर्व तापक्रम बनाए रखने के लिए होवर चालू कर देना चाहिए। चूजों को होवर के नीचे रखने के लिए चिक गार्ड होवर के किनारे से 50 से 60 सेंटीमीटर की दूरी पर गोलाई में लगा दें तथा इसके बाद चिक गार्ड चूजों के बढ़ने के साथ-साथ दूर हटाते रहना चाहिए। 10 दिन बाद चिक गार्ड को बिल्कुल हटा दें। चूजों को हैचरी से होवर के नीचे जल्दी से जल्दी ले आना चाहिए। चूजों के ब्रूडर में आने पर प्रथम 12 घंटों

में केवल ताजा तथा स्वच्छ पानी दें। दाना 12 घंटे बाद देना चाहिए। प्रथम 12 से 24 घंटों में पानी के साथ 10 प्रतिशत सुक्रोज या गन्ने का रस दिया जा सकता है।

- तापक्रम व्यवस्था के लिए ब्रूडर तापक्रम करीब 35 डिग्री सेंटीग्रेड होवर के किनारे तथा 15 सेंटीमीटर लिटर की सतह से ऊंचाई पर होना चाहिए। इस तापक्रम को दूसरे सप्ताह से प्रति सप्ताह करीब 2.5 डिग्री सेंटीग्रेड की दर से कम करें। जब तक तापमान 22 डिग्री सेंटीग्रेड ना हो जाए। होवर के नीचे यदि चूजे आराम से बिखरे हुए घूमते हैं, तो होवर का तापक्रम ठीक समझना चाहिए। एक स्थान पर एकत्रित चूजे कम तापमान बताते हैं। यदि चूजे होवर के किनारे तथा बाहर

हांफते पाए जाएं, तो बहुत अधिक तापक्रम की सूचना देते हैं। सर्दियों में ब्रूडर के कमरे का तापमान 23 से 25 डिग्री सेंटीग्रेड होना चाहिए।

- प्रकाश व्यवस्था के लिए प्रथम 2 दिन तेज प्रकाश रखना चाहिए। आदर्श प्रकाश व्यवस्था के लिए 24 घंटे प्रकाश दिया जा सकता है तथा बाद में धीमे प्रकाश की व्यवस्था करें।
- ब्रूडर घर में स्वच्छ हवा का आवागमन होना चाहिए। जाड़ों में तेज ठंडी हवा से बचाव के लिए खिड़कियों पर पर्दों का प्रयोग करें।
- एक सप्ताह के बाद लिटर को रेकर की सहायता से प्रतिदिन उलट-पुलट करते रहे। पानी के बर्तनों के चारों तरफ गीला लिटर हटाकर सूखा लिटर बिछाए। अमोनिया गैस की रोकथाम के लिए 1 किलो चूना अथवा सुपर फास्फेट 10 वर्ग मीटर स्थान के लिटर में मिला दे।
- चूजों को प्रथम दिन मक्का के टूटे दाने दिए जाते हैं। इसके बाद 35 वें दिन तक स्टार्टर दाना तथा 36 से 42 दिनों में फिनिशर आहार दिया जाना चाहिए। दिन में कम से कम 3 बार दाना दें। आहार के बर्तन केवल 1/2 से 3/4 तक ही भरे होने चाहिए।
- चूजों को 1 दिन का होने पर रानीखेत का एफ वन वैक्सीन का टीका तथा 4 दिन का होने पर पिजन पॉक्स का टीका लगवाएं। कॉक्सीडिओसिस की बीमारी से बचाव के लिए दाने में, कॉक्सीडियोस्टेट का प्रयोग करें। इस प्रकार इन बातों पर ध्यान देकर सफल ब्रायलर उत्पादन कर सकते हैं। समूह (कलस्टर) आधारित होगी। इसमें स्थानीय कंपनियों को सहयोग दिया जायेगा। जैसे बिहार का मखाना, यूपी के आम, जम्मू-कश्मीर के केसर जैसे खेती में कलस्टर बनाया जाएगा। □□

पशु चिकित्सा अधिकारी चौमूहां मथुरा

पशुचिकित्सक से जुड़े सवाल

आप पूछे विशेषज्ञ बताएं

इस स्तंभ के अंतर्गत आपके सवाल होंगे तो हमारे विशेषज्ञ के जवाब, हमें पत्र लिखें। आपसे अनुरोध है कि पत्र टाइप किया हुआ अथवा साफ-साफ लिखा हो। पहले अपना नाम लिखिए, पता लिखिए और फिर लिखिए सवाल, साथ ही आप अपनी फोटो भी भेज सकते हैं। हमारे इस बार के विशेषज्ञ हैं डॉ. पी. के. श्रीवास्तव, वरिष्ठ पशुचिकित्सक

डॉ. पी.के. श्रीवास्तव
वरिष्ठ पशुचिकित्सक

प्र. इन दिनों गाय दूध कम दे रही है, क्या करें।

राजेश, गाजियाबाद

उत्तर : पशु को नियमित रुप से मिनरल मिक्चर आयुमिन वी-5 व पोषक आहार खिलाएं। प्रतिदिन करीब डेढ़ किलो रावा, 100 ग्राम नमक भी खिलाएं।

प्र. भैंस गर्भधारण नहीं कर पा रही है।

राजकुमार, इंदौर

उत्तरः हार्मोन की कमी के कारण गर्भधारण में परेशानी होती है। कभी-कभी कुपोषण के कारण भी यह समस्या आती है। भैंस को प्रतिदिन 50 ग्राम मिनरल मिक्चर आयुमिन वी-5 पाउडर एक माह तक खिलाएं। साथ ही पशु को संतुलित आहार दें।

प्र. गाय का भूख समाप्त हो गया है।

पवन कुमार, सोनीपत

उत्तर : पशु को रुचामैक्स दवा दें। यह भूख को बढ़ाएगा। ज्यादा परेशानी होने पर जांच कराएं।

प्र. जानवर का चमड़ी दबाने पर चर-चर आवाज करता है।

दशरथ प्रसाद, पानीपत

उत्तर : जीवाणु के संक्रमण की वजह से मांसपेशी गल जाता है। यह लंगड़ी रोग है। पशु चिकित्सक से संपर्क करें। सालाना टीकाकरण जरुर कराएं।

प्र. पशु को सर्रा बीमारी हो गया है, क्या करें।

अलखदेव प्रसाद, लखनऊ

उत्तर : यह बीमारी कीड़ा काटने से होता है। पशु चिकित्सक से संपर्क करें और टीकाकरण कराएं। पशु को आयरन की गोली, ग्लूकोज खिलाना चाहिए।

प्र. गाय का शरीर नहीं बढ़ रहा है।

राजेश, गजरोला

उत्तर : जोंक रहने की स्थिति में पशु को जो आहार दिया जाता है, उसे जोंक खा जाता है। लिहाजा गाय को जोंक मारने की दवा खिलाएं। जोंक मरने के बाद पशु स्वस्थ हो जाएगा।

प्र. गाय को खुरहा रोग हो गया है, क्या करें?

अभिषेक कुमार, लुधियाना

उत्तर : यह बीमारी विषाणु के कारण होता है। ग्लीसिरिन व बोरिक एसिड मिलाकर जख्म पर लगाएं और लाल पोटास से धोएं। साथ ही एंटीबायोटिक दवा भी दें। खुरहा रोग से बचाव के लिए साल में दो बार टीकाकरण कराएं।

प्र. बरसात के दिनों में मवेशियों में होने वाले रोगों से कैसे बचाव करें।

अभय कुमार, भोपाल

उत्तर : बरसात के दिनों में गला घोंटू, सर्रा, लंगड़ी की शिकायतें मिलती हैं। कीड़े के कारण संक्रमण काफी बढ़ जाता है। पशुओं को नियमित टीकाकरण कराएं। कीड़ा भगाने के लिए पशुओं के रखने वाले स्थान पर धुआं करें।

अन्य जरुरी सलाह-पशुओं को बरसात के दिनों में होने वाली बीमारियों से बचाने के लिए पशु रखने वाले स्थान पर सोडियम कार्बोनेट, हाइड्रोक्साइड का छिड़काव करें। गर्भधारण किए हुए मवेशी में जोंक होने पर फेनबेंडाजोल और अन्य मवेशियों को एलबेंडाजोल दवा खिलाएं। पशुओं को सार्वजनिक स्थानों पर चरने के लिए न भेजें। बरसात के दिनों में ऐसे स्थानों पर कीड़े का प्रकोप रहता है, जिससे संक्रमण का खतरा रहता है।

□□

दुधारू पशुओं के लिए आवास व्यवस्था

पशुओं के विकास एवं उनसे अधिकतम उत्पादन लेने के लिए उनके स्वच्छ एवं आराम देह आवास का प्रबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है। दुधारू पशुओं को ऐसे स्थान में रखना चाहिए, जहां उन पर गर्मी और सर्दी का प्रभाव कम हो तथा पशुओं को सूरज की सीधी किरणों और हवा के थपेड़ों से बचाया जा सके।

ग्रीष्मकाल में गर्मी बढ़ने पर पशुओं को बहुत कष्ट होता है। गर्मी के कारण पशु बेहाल हो जाते हैं और वे पसीना बहाकर और हांफ हांफ कर अपने शरीर को किसी प्रकार से ठंडा रखने की कोशिश करते हैं। पशु चारा दाना नहीं खा पाते हैं और उनका दूध धीरे धीरे कम हो जाता है। अतः पशुओं के रहने के लिए उपयुक्त स्थान होना चाहिए।

पशुशाला में प्रत्येक गाय या भैंस के लिए कम से कम 5.5 फीट चौड़ी और 10 फीट लंबी पक्की जगह होनी चाहिए। पशुशाला का फर्श खुरदरा किंतु कांक्रीट का होना चाहिए। नाली की ओर 1.5 फीट ढलान होनी चाहिए। नाली 8 इंच चौड़ी और 3 इंच गहरी होनी चाहिए ताकि पशु के रखने का स्थान स्वच्छ रह सके और वहां कीटाणुओं का प्रकोप न हो सके।

पशु घर की छत कम से कम 10 फीट ऊंची होनी चाहिए भले ही वह फूस की शीट की या पक्की ईंटों की हो। पशुघर तीन तरफ से खुला होना चाहिए। केवल पश्चिम दिशा में दीवार होनी चाहिए। हर पशु के लिए छत की ऊंचाई पर 3 फीट 4.5 फीट के खुले रोशनदान होने चाहिए। सर्दी में टाट द्वारा तीनों खुली दिशाओं में ढक देना चाहिए। पशु घर की पश्चिमी दीवार पर 2 फीट चौड़ी और 1.5 फीट गहरी चरही या नांद बनानी चाहिए। चरही या नांद का आधार भूमि तल से 1 फीट ऊपर होना चाहिए। नांद के साथ स्वच्छ जल की व्यवस्था होना भी आवश्यक है।

पशु घर की पूर्वी दिशा में पशुओं के घूमने का क्षेत्र होना चाहिए। पशुओं को वृक्षों की छाया में सबसे अधिक आराम मिलता है। घूमने के क्षेत्र में नीम जैसे छायादार वृक्ष लगाने चाहिए। ग्रीष्मकाल में पशुओं के शरीर पर 15 से 20 मिनट के अंतराल पर पानी छिड़कने से उन्हें गर्मी से राहत मिलती है क्योंकि वाष्पीकरण से उन्हें ठंडक पहुंचती है। राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड ने छोटे किसानों हेतु एनिमल कूलिंग सिस्टम विकसित किया है। यह कूलिंग सिस्टम 4 से 10 पशुओं के लिए पर्याप्त है।

सुरक्षित जीवन का संदेश

-अनिरुद्ध शर्मा

हे भारत के वीर नागरिकों अपनी मर्यादा न भूलो।
कोरोना के इस संकट में अपने जीवन से मत खेलो।।

हमारी खुद की नासमझी से, वायरस प्रकोप बढ़ा है हे मानव।
अभी भी समय है सुधरने का, जीवन बहुमूल्य है हे मानव।।
जिम्मेदारियां हम सब पर हैं, ध्यान करो उनका हे मानव।
संस्कारों से सम्पन्न है, इस भारत वर्ष का हर मानव।।

नियमों का पालन ना कर, तुम वीर नहीं बन जाओगे।
नियमों का पालन करोगे तो, तुम धीर अवश्य बन जाओगे।।
संकट के इस समय यदि तुम, मन की स्थिरता को बढ़ा लोगे।
कल आने वाले भारत के, तुम वीर अवश्य कहलाओगे।

सामाजिक दूरी बनाने में, समस्या कहां है हे मानव।
इतनी भी क्या जल्दी है, जीवन प्यारा नहीं है हे मानव।।
स्वयं पर करो नियंत्रण, ये मूल मंत्र है हे मानव।
सबकी सुरक्षा तभी होगी, जब सुधर जाए सभी मानव।।

मुंह, आंख, नाक की रक्षा, करना है जरूरी हम सबको।
ये ही ऐसे पथ है जिनसे, वायरस दुख दे सकता है हम सबको।
हाथों सफाई का महत्व, समझना है अवश्य हम सबको।
आंख, नाक, मुंह की रक्षा करके, सुरक्षित रहना है हम सबको।।

सदस्य बनें

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

एक अच्छी आदत पड़ जाए
जो ज्ञान का दीप जलाएं

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

आयुर्वेट लिमिटेड, 101-103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010 (उ.प्र.). दूरभाष: 91-120-7100201

कृपया स्पष्ट लिखें/टाइप करें:

☐ स्वयं के लिए ☐ मित्र को भेंट ☐ संस्थागत

नाम:.....संस्थान.....

पता:☐ कार्यालय ☐ घर.....

.....

पिन.....

दूरभाष:☐ कार्यालय ☐ घर.....

मैं राशि.....नकद/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट/चैक क्रमांक.....(दिल्ली से बाहर के लिए 15 रुपए अतिरिक्त जोड़कर दें) दिनांक..... ''आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली'' के नाम प्रेषित कर रहा हूं। कृपया पत्रिका प्रेषित करें।

मूल्य : 25/- रुपए प्रति अंक
वार्षिक सदस्यता शुल्क : 275/- रुपए

आयुर्वेट रिसर्च फाउण्डेशन

नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित अनुसंधान केंद्र में निम्नलिखित जांच सुविधाएं उपलब्ध-

- ✓ खाद्य, पशु आहार और हरा चारा
- ✓ पानी
- ✓ मिट्टी
- ✓ जैविक खाद
- ✓ औषधीय पौधे
- ✓ एंटीबायोटिक्स
- ✓ माइकोटॉक्सिन

हमारे अनुसंधान केंद्र में आपका स्वागत है। हम शैक्षिक दौरों के लिए आवेदन आमंत्रित करते हैं।

हम मनुष्यों और पशुधन के लिए सुरक्षित और गुणवत्तायुक्त खाद्य उत्पादन में सहयोग करते हैं।

Registered Office : 4th Floor , Sagar Plaza, Distt. Centre, Vikas Marg, Laxmi Nagar, Delhi, INDIA - 110 092.
Phone: 011-22455993 • Email: info@ayurvet.com • Website: www.ayurvet.com

Corporate Office: Unit No. 101-103, 1st Floor, KM Trade Tower, Plot No. H-3, Sector-14, Kaushambi, Ghaziabad -201010 (U.P.)
Tel.: 0120-7100201 • Fax : 0120-7100202

AYURVET RESEARCH FOUNDATION

सफल ब्यांत - अधिक दूध उत्पादन तथा मुनाफे की ओर बढ़ते कदम
बेहतर पशु स्वास्थ्य, अच्छा पाचन और अधिक दुग्ध उत्पादन
स्वस्थ ब्यांत
बढ़िया पाचन प्रणाली
स्वस्थ अयन
एक्सापार
जेर गिराने व गर्भाशय की सफाई के लिए
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक
रैस्टोबल
रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये,
तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए
TM
AYURVET
आयुर्वेट लिमिटेड
कॉरपोरेट कार्यालयः यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर, प्लाट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र)
दूरभाषः +91-120-7100201 फैक्सः +91-120-7100202
ई-मेलः customercare@ayurvet.com वेबः www.ayurvet.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050587
रजिस्ट्रड ऑफिसः चौथी मंजिल, सागर प्लाज़ा, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092
पारंपरिक ज्ञान
आधुनिक अनुसंधान